करने में अवश्य प्रयत्न करेंगे। इस ग्रंथ को आपकी पवित्र सेवा में सविनय अर्पण करता हूं, औ

सान पाठकों से हार्दिक भावों से प्रार्थना करता हूं कि -: हमारे माननीय सेठ जी का अनुकरण

करें।

नीः आप

वाडीलाल

...में भी यह पूर्ण विश्वास रखता हूं कि आप अपने स्वजाति और स्वधर्म बन्धुओं के सद्ज्ञान और सद्धर्म ...आशा करता हूं इस "प्रश्नोत्तर सर्वा रत्नमाला" ग्रंथ का तन, मन, धन से प्रचार करने में अवश्य प्रयत्न करेंगे। इस ग्रंथ को आपकी पवित्र सेवा में सविनय अर्पण करता हूं और साथ ही विनय पूर्वक ज्ञान पिपासुओं से हार्दिक भावों से प्रार्थना करता हूं कि :- हमारे माननीय सेठ जी का अनुकरण करके जैन धर्म का प्रचार करें।

ली: आपका धर्म बन्धु.

वाडीलाल एम शाह.

देहली.

संक्षिप्त जैन ऐतिहासिक नीचे की वार्ता ग्रन्थों में है । वीर संवत् से विवरण.

(१) १६४ की साल में चंद्र गुप्त राजा हुआ.
(२) ३७६ की साल में श्री श्यामाचार्यजी ने श्री पन्नवणाजी सूत्र रचा (बनाया).
(३) ४७० वर्ष विक्रम संवत् चला.
(४) ६०५ वर्ष शालिवाहन राजा का शक चला.
(५) ६०६ वर्ष दिगम्बर मत की उत्पत्ति.
(६) ६७० वर्ष साचोर (नगर) में श्री वीर स्वामीजी की प्रतिमा स्थापी.
(७) ८२० वर्ष चौदस की पक्खी चली.
(८) ८६४ की साल में श्री गंधहस्ती आचार्यजी ने पहले टीका रची.
(९) ८८२ वर्ष चैत्यवासियों की स्थापना.
(१०) ९८० वर्ष देवर्धि गणी क्षमा श्रमणजी ने सूत्र पुस्तकारूढ किए.
(११) ९९३ वर्ष कालिकाचार्यजी ने चौथ की संवत्सरी की.
(१२) १००० वर्ष पूर्व विच्छेद गया.
(१३) १००८ वर्ष चैत्यवासियोंने पौषधशालामें वास किया.
(१४) १०५५ की साल में हरिभद्र सूरजी ने १४४४ प्रकरण रचा.

(१) ७०० की साल में शीलकाचार्यजी हुए. (श्री आचारांगजी के टीकाकार)

(२) ९९१ में बड़गच्छ सर्व देव सूरि से चला.

(३) १०९६ की साल में वादि वेताल शांति सूरिजी देवलोक हुए.

(४) ११३५ की साल में श्री अभयदेव सूरिजी हुए. (नवांगी-टीकाकार)

(५) ११५९ में पुनमिया गच्छ चंद्रप्रभ सूरिजी से चला.

(६) ११६९ में अंचल गच्छ आर्य रक्षित सूरिजी से चला.

(७) १२०४ में खरतर गच्छ जिनदत्त सूरिजी से चला.

(८) १२२९ में श्री हेमाचार्यजी स्वर्ग में गये. (कुमारपाल प्रतिबोधक कुमारपाल का राज ११९९ से १२२९ तक)

(९) १२३६ में साधु पुनमिया गच्छ चला.

(१०) १२५० में आगमिया गच्छ चला.

(११) १२८५ में तपगच्छ जगत्चंद्र सूरिजी से चला.

(१२) १५३० में लोंकाशाह ने दया धर्म की प्रवृत्ति की.

(१३) १५६५ में पार्श्वचंद्र गच्छ निकला.

॥ मंगलाचरण ॥

अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः
आचार्या जिनशासनोन्नति कराः पूज्या उपाध्यायकाः ।
श्री सिद्धान्त सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥

॥ दोहा ॥

आदिदेव अरिहंतजी, भयभंजन भगवंत,
मंगल कमला धार जे, पायो भव जल अंत ॥ १ ॥

ताके चरणां में शिर धरी, प्रणमूं परम उल्लास,
गुरु गिरुवा ज्ञाननिधि, सफल करो मम आस ॥ २ ॥

शांति सुधारस जल भरा, कांता वपु गुणवान,
आत्म ज्ञान की ज्योति से, लगो तान गुलतान ॥ ३ ॥

ऐसा गुरुवर कमल में, परिमल रहा पुराय,
ज्ञान सुवास की गरज से, मन-मधु कर लपटाय ॥ ४ ॥

नित्य नित्य नूतन नेह से, नमन करूं गुरुराय
कृपा करो मम ऊपर, कारज सब ही थाय ॥ ५ ॥

अविदित ज्ञान अनंत है, जाको न लहिये पार
किंचित बुद्धि साधन, करूं हूं तास विस्तार ॥ ६ ॥

सूत्र-ग्रंथ बहुत देखे, विध विध शास्त्र धार
सारभाग उसका कहूं, ज्ञानी तणा प्रकार ॥ ७ ॥

[illegible] ॥ ६ ॥
[illegible] ॥ ७ ॥

कोई सूत्र कोई अर्थ में, कोई प्रकरण में जोय
कोई सज्जन से धारिया, प्रश्नोत्तर अति सोय ॥ ८ ॥
स्थिर चित्त विवेक से, वांचे तो फल होय
नहीं पूर्णता यहां की, दोष न दीजो कोय ॥ ९ ॥

"श्री हिन्दी प्रश्नोत्तर मणि रत्नमाला"

ॐ नमो अरिहंताणं ॥ ॐ नमोसिद्धाणं ॥ ॐ नमो आयरियाणं ॥ ॐ नमो उवज्झायाणं ॥ ॐ नमो लोए सव्व साहूणं ॥

प्रश्नोत्तर १

प्रश्नः—श्री नमस्कार मंत्र के पांचवें पद में कहे हुए " लोए " शब्द का हेतु क्या है ?

उत्तरः—श्री अरिहंत जी, आचार्य जी, उपाध्याय जी, इन तीनों का प्रायः करके " साहरणा " नहीं होता है और साधु जी महाराज का " साहरणा " प्रायः करके कोई देवता मनुष्य क्षेत्र के बाहिर लोक में दूसरे ठिकाने ले गया हो तो उनको भी हमने नमस्कार करना है इस लिये " लोए " शब्द कहा है [२] श्री अरिहंत जी, आचार्य जी और उपाध्याय जी यह तीनों ही नंदीश्वर द्वीप में तथा रुचक द्वीप में तथा पंडक वन में नहीं जाते हैं और साधु जी महाराज जाते हैं इस लिये " लोए " शब्द कहा है [३] श्री अरिहंत जी, आचार्य जी तथा उपाध्याय जी यह तीनों ही पुरुष हैं और साधुजी महाराज में साधु साध्वी जी का दोनों का समावेश होता है [४] कितनेक भाव साधुजी महाराज अप्रमादि गुण-स्थान वाले गृहस्थलिंग में तथा अन्यलिंग में हैं उनको भी नमस्कार करना है इस लिये "लोए" शब्द कहा है श्री अरिहंत जी आचार्य जी उपाध्यायजी यह तीनों ही स्वलिंगमें ही होते हैं इसलिये "लोए" शब्द नहीं कहा [५] सिद्ध तो मुक्ति शिला के ऊपर हैं और श्री अरिहंत जी, आचार्य जी तथा उपाध्यायजी यह तीनों ही अढ़ाई द्वीप में हैं इस लिये इन चारों पदों में "लोए" शब्द नहीं कहा है और साधुजी महाराज अढ़ाई द्वीप में तथा अढ़ाई द्वीप के बाहिर तथा लोक में अन्य स्थान में भी होते हैं इस लिये पांचवें पद में "लोए" शब्द कहा है (शास्त्र: श्री" चंद्रप्रज्ञप्ति "सूत्रकी नवकारसी) जयकि:—श्री केवली

करते हैं तब उन्हों के आत्म प्रदेश संपूर्ण लोक में व्याप्त हो जाते हैं इसलिये " लोए " शब्द ग्रहण किया गया है क्योंकि यह प्रदेश साधु रूप ही है श्री केवली भगवान् की केवल समुद्घात स्वाभाविक से ही होती है। वेदनीय कर्म और आयु कर्म के सम करने के लिए.

प्रश्नोत्तर. २

प्रश्नः—साधु जी महाराज अपने हाथ से आज्ञा ले कर के पानी लेना कल्पे कि नहीं ?

उत्तरः—गृहस्थ पानी लेने की आज्ञा दे तो लेना कल्पे. (शास्त्रः- श्री "आचारांगजी" सूत्र श्रु० २ अ० १ उ० ७)

प्रश्नोत्तर. ३

प्रश्नः—नारियल के भीतर का पानी साधुजी महाराज को लेना कल्पे कि नहीं ?

प्रश्नोत्तर. ९

प्रश्नः—श्री "प्रश्नव्याकरण" तथा श्री "उववाईजी" सूत्र में श्री तीर्थंकर देव तथा युगलीया के आहार के समय में ऐसा कहा है कि—"कंकगहणी कवोय परिणामे" इसका क्या अर्थ है ?

उत्तरः— "कंकगहणी" अर्थात कंकपक्षी [बगुला] जैसे अपनी खुराक मछी की मछी चबाए बिना खाता है वैसे ही श्री तीर्थंकर देव तथा युगलीया अपना आहार चबाए बिना उतारते हैं. "कवोय परिणामे" अर्थात् कबूतर जैसे कंकर आदि पचाता है वैसे ही श्री तीर्थंकर देव तथा युगलीया को भी आहार पचता है.

प्रश्नोत्तर. १०

प्रश्न —श्री "सूयगडांगजी" सूत्र के श्रु० २ अ० ५ गाथा ८ ९ में कहा है कि—कोई साधुजी महाराज आधाकर्मी

[illegible] ग्रंथ के तीसरे स्थान में कहा है कि–अधोलोक अवधज्ञानी को भी देखना दुर्लभ है तो पीछे विभंगज्ञानी को तो [illegible] क्या ? इसलिये अधोलोक विशेष न देखें.

प्रश्नोत्तर. १४

प्रश्न—एक समय एक स्त्री के उत्कृष्ट कितने जीवों का जन्म हो ?

[illegible] जघन्य १–२ और उत्कृष्ट जन्मे तो ४ जन्मे. (१) पुरुष (१) स्त्री (१) नपुंसक. (१) बिंब. [illegible] का आकार वाला जैसे सर्पाकार नोलिया पक्षी वगैर का आकार) पुनः (२) पुरुष. और (१) बिंब अर्थात् [illegible] (१) बिंब जने. इसी तरह नपुंसक का समझना. परंतु एक समय ४ उपरांत गर्भ न जने (शास्त्रः–श्री [illegible] ग्रंथ के तीसरे स्थान में तथा श्री " रत्न चिंतामणि " ग्रंथ)

...शेषनाग के फन के ऊपर पृथ्वी रही हो तो शेषनाग कौन से आधार से रहा ...तः पृथ्वी तो घनवाय [वायु] के आधार से रही है. मशक के दृष्टांत समझाने से यह बात बराबर समझेंगे. मशक के नीचे के भाग में वायु भरके ऊपर पानी भरे परंतु एक बिंदु नीचे न जावे. इस न्याय से पृथ्वी, आकाश और वायु के ... भूमि कंप होने के ३ कारण श्री " ठाणांगजी " सूत्र के तीसरे स्थान में उ० ४ में यह कहा है कि—

३ कारण से भूमि कंपे. [१] इस पृथ्वी पर बड़े स्थूल पुद्गल के गिरने से भूमि कंप हो जाता है जैसे पहाड़ादिको गिरने से. [२] वाणव्यंतर देव अपने भवन में रह कर ऊंचा नीचा हो कर कंपावे. [३] नागकुमार–सोवनकुमार देव आपस में युद्ध करें इसलिये भूमि कंपती है और तीन कारण से पृथ्वी " देश से " कंपे और द्वितीय तीन कारण से " सर्वथा " कंपे [१] पृथ्वी के नीचे का आधारभूत वायु हिलने से. [२] देवता बड़ी ऋद्धि का मालिक साधुजी महाराज को अपनी ऋद्धि बल आदि बतावे. [३] वैमानिक देव और भवनपति देव आपस में युद्ध करें यह तीन कारण से " सर्वथा " भूमि कंपे.

प्रश्नोत्तर. २१

प्रश्नः—श्री "ठाणांगजी" सूत्र के स्थान ३ उ० १ में मनुष्य के विषय तीन प्रकार के नपुंसक कहे वे कर्मभूमि, अकर्म भूमि तथा अंतर्द्वीप में २ भेद है और यहां नपुंसक का भेद कहा इसका क्या कारण ?

उत्तर:—अकर्मभूमि तथा अंतर्द्वीप में सम्मूर्छिम मनुष्य आश्री नपुंसक भेद लिया है.

प्रश्नोत्तर. २२

प्रश्नः—सनत्कुमार, चक्रवर्ती मोक्ष गये कि देवलोक गये ?

उत्तर:—श्री 'ठाणांगजी" सूत्र के स्थान ४ उ० १ अंतक्रिया के अधिकार में कहा है कि-सनत्कुमार मोक्ष गये.

[illegible] (२) जंघा से जीव निकले तो तिर्यंच गति में गये समझना. (३) हृदय से जीव निकले तो मनुष्य गति [illegible] (४) उत्तमाग से (शीर) जीव निकले तो देवगति में गये समझना. (५) सर्वांग से जीव निकले [illegible] गये समझना. इसी तरह अंग उपांगादिक से विशेष तथा अविशेष गति समझनी.

प्रश्नोत्तर. २७

[illegible] — श्री "ठाणांगजी" सूत्र के स्थान ७ में सात कुलगर कहे हैं तथा श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० ५ उ० [illegible] श्री "ठाणांगजी" सूत्र के स्थान १० में दश कुलगर कहे यह कैसे ?

उत्तर:—दश कहा वह गत उत्सर्पिणी काल का समझना. सात कहा वह वर्तमान अवसर्पिणी काल का समझना. [illegible] दोनों ही ठिकाने नाम अलग २ हैं इसलिये अलग कहा है.

उत्तर — श्री "ज्ञानाजी" सूत्र में " ८०० कहा वह विपुलमति मनःपर्यव ज्ञानी का धनी समझना और श्री "समवायांगजी" सूत्र में ७०० कहा वह ऋजुमति तथा विपुलमति दोनों एक साथ ही समझना.

प्रश्नोत्तर ३५

प्रश्न — श्री " समवायांगजी " सूत्र के ३२ वें " समवायांगजी " में ३२ इंद्र कहे और श्री "जंबुद्वीप पन्नति" सूत्र में ६४ कहे और श्री " ठाणांगजी " सूत्र के स्थान दूसरे में ६४ कहे वह कैसे ?

उत्तर — श्री " समवायांगजी " सूत्र में कहे वह वाणव्यंतर अल्प ऋद्धि वाले ३२ बिना कहे और श्री "जंबुद्वीप पन्नति" में वाणव्यंतर का १६ बढ़ा के ४८ कहे और सर्व मिल के ६४ कहे.

प्रश्नोतर ३७

प्रश्न —श्री तीर्थंकर, चक्रवर्ती, वासुदेव तथा बलदेव यह चारों पुरुष चौथे गुणस्थान से छठे गुणस्थान में जावें परन्तु पांचवें गुणस्थान का स्पर्श न करें इसका क्या कारण है ?

उत्तर:- पांचवां गुणस्थान कायरपणे का है जैसे कि—जब आनंदजी आदि श्रावक ने व्रत ग्रहण किया तब ऐसा कहा कि धन्य है ? राजा, ईश्वर, तलवर, सेठ, सेनापति वगैरह ने आपके पास दीक्षा अंगीकार किई है, परन्तु ऐसा करने में असमर्थ हूं, इस कारण उत्तम पुरुष को बुरा है इससे कायरपणा नहीं करता के शुरपणे छठा गुणस्थान अंगीकार करें परन्तु पांचवा गुणस्थान स्पर्श नहीं करें. (शास्त्र:-श्री " समवायांगजी " सूत्र के ५४ वे " समवायांगजी " की)

प्रश्नोतर ३८

प्रश्न:—धातकीखंड और पुष्कर द्वीप का मेरू कितना ऊंचा है ?

उत्तर — ९९००० योजन का ऊंचा है मूल में प्रत्येक २ एक हजार योजन का ऊंचा है और ८४००० योजन [illegible] (शास्त्र:-क्षेत्र प्रभाश की तथा श्री "समवायांगजी" सूत्र की)

प्रश्नोत्तर ३९

प्रश्न — शुक्रावतंसक विमान तथा ईशानावतंसक विमान लंबा व चौड़ा कितना ?

उत्तर — साढ़े बारह लाख योजन लंबा चौड़ा है (शास्त्र:-श्री "समवायांग" जी सूत्र की)

प्रश्नोत्तर ४०

प्रश्न:—नरक में पत्थर कहा है और देवलोक में पत्थर कहा उसमें क्या फरक है ?

उत्तर —नरकमें पत्थर कहा वह चारों दिशाओं में भींतों से जड़ा हुआ है। परन्तु खुला नहीं कारण कि—पहिली

... वह पोली वायु की भांति विभाग रूप है उसको खाड कहा है। और देवलोक में जो परस्तर है वह ... और खुल्ला ऊपर उपर रहा है उसको परस्तर कहा है (शास्त्रः–श्री "समवायांगजी" सूत्र की)

प्रश्नोतर ४१

प्रश्न – नारकी में परस्तर (पाथड़ा) मंजिल माफिक है तो देवलोक में अन्तर कैसे समझना ?

उत्तर – असंख्यात योजन की क्रोड़ा क्रोड़ी ऊंचा जावे वहां पहिला देवलोक आवे और उनका पहिला परस्तर आवे वह कहते हैं, ३००० योजन का भूतला है और ५०० योजन का महेल है और उसके ऊपर ध्वजा है और उसके ऊपर दूसरा परस्तर का भूतला आवे और पीछे महेल आवे। इस भांति सर्व देवलोक का परस्तर चारों तरफ खुल्ला है और नारकी का परस्तर चारों ही तर्फ है। आम की गुठली के माफिक अन्तर समझना.

प्रश्नोत्तर. ४४

प्रश्न —देवकुरु, उत्तरकुरु का युगलीया को कब आहार की इच्छा उपजे ?

उत्तर.—देवकुरु, उत्तरकुरु का मनुष्य युगलीया को अट्टम भक्त (तीसरे दीन) आहार की इच्छा उपजे । परंतु [illegible] के तिर्यंच युगलीया को छट्ट भक्त (दूसरे दिन) आहार की इच्छा उपजे । इसलिये तिर्यंच को छट्ट भक्त कहना [illegible] मनुष्य का अट्टम भक्त कहना (शाख:-श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १ उ० २)

प्रश्नोत्तर. ४५

प्रश्न —जीव कौन से कर्म की उदीरणा करें ?

उत्तर.—उत्थानादिक पांच बोल कर के उदीरणा योग्य कर्म की उदीरणा करें । परंतु उदय हुआ पीछे उदीरणा न

[illegible] (शास्त्र:-श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १ उ० ३) ऐसे ही आकांक्षा मोहनीय कर्म की उदीरणा की है। उसको उपशान्त करे. (क्रोध उत्पन्न शांतवत्) परंतु उदय आवे पीछे उपशांत न कर सके.

प्रश्नोत्तर ४६

प्रश्नः—साधुजी महाराज आकांक्षा मोहनीय कर्म कितने प्रकार से भोगवे ?

उत्तरः—१३ बोल कर के भोगवेः-मांहो मांहि अंतर पडे. वह (१) ज्ञान अंतर. (२) दर्शन अंतर (३) चारित्र अंतर (४) लिंग अंतर. (५) प्रवचन अंतर. (६) प्रवज्या अंतर. (७) कल्प अंतर. (८) मार्ग अंतर. (९) मतांतर. (१०) भागांतरे. (११) नय अंतर. (१२) नियमांतरे. (१३) प्रमाण अंतर। यह १३ बोल कर के आकांक्षा मोहनीय कर्म वेदे. (शास्त्र:-श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १ उ० ३)

उत्तर. अंत गुणस्थान से उतरते बाल वीर्यपणों और बाल पंडितवीर्यपणों आवे अर्थात् श्रावकपणा पावे तथा अज्ञानपणा पावे और मोहनीय कर्म का उपशम हो तो अंत गुणस्थाने चढे। वह श्रावकपणा तथा साधुजीपणा पावे (शास्त्रः-श्री "भगवतीजी सूत्र के श० १ उ० ४)

प्रश्नोत्तर. ४९

प्रश्नः— मोहनीय कर्म के उदय में क्या करे ?

उत्तर— पूर्व आहिंसा धर्म करता था। परंतु उदय भाव से पीछे हिंसा धर्म करे. (शास्त्रः-श्री "भगवतीजी" सूत्र श० ...

प्रश्नोत्तर. ५०

प्रश्नः दान देना वह तो क्षयोपशम भाव से दे सके हैं तो दान देनेवाला जीवों मिथ्यात्वी भी है और सम्यक्त्वी

प्रश्नोत्तर. ५२

प्रश्न — नारकों की मध्यम स्थिति में क्रोध, मान, माया, लोभ का ८० भांगा करने का क्या कारण ?

उत्तर. नारकी की मध्यम स्थिति का स्थानक असंख्याता है। इसलिये क्रोधी नेरीया एक वचन भी लाभे है। इस कारण से ... ८० भांगा लाभे है और जघन्य उत्कृष्ट स्थिति में एक वचनीय नहीं। इसलिये ८० भांगा कहा है.

[शास्त्र: श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १ उ० ५]

प्रश्नोत्तर. ५३

प्रश्न: — जघन्य अवगाहना में ८० भांगा क्रोध, मान, माया, लोभ का कहा इसका क्या कारण ?

मूल शरीर की जरूरत पड़े। परंतु अन्य दूसरा रूप धरने में मूल शरीर की बिलकुल जरूरत नहीं। आत्म प्रदेश से रूप बनाते हैं जैसे देवता वैक्रेय समुद्घात करके शरीर से आत्म प्रदेश बाहिर निकल कर आत्म प्रदेश से बाहिर का पुद्गल ग्रहण करके रूप बनाते वैसे ही यह गर्भ में रहा हुआ जीव रूप बना सकते हैं.

प्रश्नोत्तर ५६

प्रश्नः—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० उ० ७ में कहा कि-वायु स्पर्श से मृत्यु होवे। परंतु बिना स्पर्श से न मरे तो घनवायु आदिक तो स्थिर हैं तो उनका मृत्यु कैसे होवे ?

उत्तरः—वायु बिना स्पर्श से मृत्यु नहीं होता। इसलिये घनवायु अस्थिर हैं(ठाणांग-स्थान ३ में सर्वथा पृथ्वी चले) वहां कहा है कि-घनवायु गुंजे हैं। इनसे घनोदधी कंपे हैं. इनसे पृथ्वी सर्वथा चले हैं तो इस न्याय से स्पर्श से मरे. वायु-

... ...आ" का अर्थः—वृत्ति मे ऐसा किया है कि:-सूर्य के निद्रत से २ से भोजन करते हैं अर्थात् दिन में एकवार ... ... भोजन करने से ऐसा शरीर देदीप्यमान लगते हैं वगैरह यहां अलंकार है इस न्याय से श्री भगवान् ... ... ऐसा कहने मे बाधक नहीं.

प्रश्नोत्तर ५८

प्रश्न—श्री "भगवती जी" सूत्र के श० २ उ० १में कहा है कि:-बारह प्रकार के बाल मरण करें तो जीव अनंत ... ... ऐसा कहा है. और श्री "ठाणांगजी" सूत्र के स्थान २ में किसी कारण से २ मरण की आज्ञा है ... कैसे ?

उत्तर:—श्री "ठाणांगजी" सूत्रमें आज्ञा कही वह तो शील रखनेके लिये है। परन्तु वह बाल मरण नहीं है। किन्तु आराधिक होते हैं। इससे आज्ञा कही है।

प्रश्नोत्तर ५९

प्रश्नः—सकाम निर्जरा किसको कहनी ?

उत्तरः—सकाम निर्जरा का २ भेद हैं. (१) समदृष्टि सकाम निर्जरा. (२) मिथ्यात्वी की सकाम निर्जरा. जिस में समदृष्टि जीव भव घटनेकी इच्छा सहित अणसनादिक १२प्रकार की भीतर तपस्या अंगीकार करें। उसको सकाम निर्जरा कहनी और यह संसार घटाती है और मिथ्यात्वी जीव दो प्रकार के हैं(१) उर्ध्वमुखी (२) अधोमुखी. उस में जो उर्ध्वमुखी जीव है। वह परभव की सुखकी इच्छासहित तपस्या करें। उसको सकाम निर्जरा कहनी. वह संसार घटानेमें कारणरूप होती है. (शास्त्रः श्री "विपाक" सूत्र के अ० ११ में) सुमुख गाथापति आदिक की तरह और जो अधोमुखी जीव जो लोभ सहित इच्छा से तपस्या करें। उसको भी सकाम निर्जरा कहनी। परंतु निर्जरा से संसार बढ़ाते हैं (शास्त्रः श्री "भगवती जी" सूत्र के श० २ उ० १)

प्रश्नोत्तर ६०

[illegible] केवली महाराज के आहार संज्ञा नहीं है तो तेरहवा गुणस्थान में रहा हुआ जीव आहार करते हैं [illegible] कि नहीं ?

[illegible] केवली महाराज आहार करते हैं। परन्तु संज्ञा नहीं। जैसे साधुजी महाराज के फोडा आदि व्याधि होने [illegible] साता संयम के अर्थ जैसे उपचार करते हैं। इस न्याय से श्री केवली महाराज क्षुधा वेदनीय कर्म के [illegible] आहार करते हैं। परन्तु वह संज्ञा नहीं।

प्रश्नोत्तर ६१

प्रश्न.—श्री केवली महाराज आहार करते हैं। ऐसा किस ठिकाने है ?

उत्तरः— श्री " भगवतीजी " सूत्र श० २ उ० १ में स्कंधजी के अधिकार में श्री भगवान महावीर स्वामीजी ने आहार किया तथा श्री " ज्ञाताजी " सूत्र में श्री मल्लिनाथ भगवान दो उपवासों के पारणे के वास्ते गए वगैरह। प्रथम दातार तथा दान का अधिकार है। इस न्याय से श्री केवली महाराज क्षुधा वेदनीय के कारण आहार करते हैं। इसमें शंका नहीं है।

प्रश्नोत्तर ६२

प्रश्नः—मनुष्य के गर्भ वास में जीव की जघन्य स्थिति अंतर मुहूर्त की और उत्कृष्ट १२ वर्ष की और काय स्थिति करे तो उत्कृष्ट २४ वर्ष रहे इसी तरह (श्री भ० सू० श० २ उ० ५ में कहा है) सो कैसे ?

उत्तरः—एक जीव माता की कुंख में १२ वर्ष रहे। पीछे वहां से मर के दूसरी माता की कुंख में १२ वर्ष रहे।

पने हो २४ वर्ष की काय स्थिति करें तथा उन्हीं माता के गर्भ में फिर उपजे ।

अत्र शंका—तिवारे कोई कहे कि—उसी गर्भ में उपजे वह कैसे ?

तत्रोत्तरः—उसी गर्भ में न उपजे (शास्त्रः श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १५) में श्री भगवान ने गोशाला का कहा कि—वनस्पति में तो पौड परिहार है । परंतु मनुष्य में नहीं अर्थात् मनुष्य के कलेवर में पीछे मनुष्य न उपजे । कारण कि—माता पिता का संबंध होना चाहिए । बिना संयोग न उपजे और माता पिता का संबंध होवे । तिवारे नया शरीर बंधे—उस में दुसरा २२ वर्ष पूर्ण करें ।२४ वर्षकी स्थिति मनुष्य के गर्भ वास में जीव करें । अर्थात् दूसरी माता की कुंख में १२ वर्ष रहे । परंतु बीच में अंतर न पड़े । ऐसा समझना ।

प्रश्नोत्तर ६३

प्रश्नः—तिर्यच गर्भ में एक भव रहे तो कितने काल रहे !

उत्तर:—जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट आठ वर्ष तक रहे (शास्त्र:-श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० उ० ७)

प्रश्नोत्तर ६४

प्रश्न:—बाह्य तप किस को कहना और अभ्यन्तर तप किस को कहना ?

उत्तर—बाह्य तप तो शरीर को शोषन रूप है। इन तपश्चर्यादिक से "तो अमोस्यादिक लब्धि" की प्राप्ति होती है और अभ्यन्तर तप से शुद्ध अंतरंग भाव तप से अनंत कर्म की निर्जरा होती है।

प्रश्नोत्तर ६५

... " सूत्र श० ५ उ० १ में कहा है कि:—सूर्य आठों दिशाओं में उदय होता है और ... फिर पूर्व दिशा किस को कहनी ?

उत्तर — भरतक्षेत्र की अपेक्षा से जो पूर्व दिशा कही है। उसको भी पूर्व दिशा कहनी।

शंका — [illegible] में तो सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इस लिए उनको पूर्व दिशा कहना बाधा नहीं। परन्तु [illegible] में तो पूर्व दिशा में सूर्य उदय होना नहीं है। तो पीछे उन क्षेत्रवालों को पूर्व दिशा कौन सी समझना।

उत्तर — [illegible] पर्वत के ऊपर पहिले माडले की आदि है। इस से पूर्व दिशा उसको ही कहनी।

विशेष शंका —पहिले माडले की आदि तो निलवंत पर्वत ऊपर भी है तो वह पूर्व दिशा कैसे न कही ?

उसका उत्तर—ऊपर,के श० ५ उ० १ में श्री जिनराज देव ने कहा कि—पहिले समय आवलिका ऐसे ही [illegible] भरत इरवर्त क्षेत्र में स्पर्शी है और उसके दूसरे क्षेत्रों में समय होता है। उस अपेक्षा से पूर्व उसी को ही [illegible]

प्रश्नोत्तर ६९

प्रश्न – श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० ६ उ० ८ में कहा है कि- सुधर्म तथा ईशान देवलोक में बादर पृथ्वी बादर अग्नि नहीं है। ऐसा कहा तो विमान पृथ्वी दल है तो नहीं कहने का क्या कारण ?

उत्तर – देवलोक में नहीं समझना। परन्तु "अर्हनाम" देवलोक के नीचे समझे; अर्थात् आकाश में नहीं। परन्तु तापसराय की अपना में बादर पानी वनस्पति वायु है। ऐसा समझे परन्तु पृथ्वी और अग्नि यह दो बोल न गिनने।

प्रश्नोत्तर ७०

प्रश्नः–श्रावकजी त्रस जीव मारने का प्रत्याख्यान करते हैं तो अब्रह्मचर्य सेवते। त्रस जीव की विराधना होती है तो व्रत भंग हो या कि नहीं ?

प्रश्नोत्तर ७१

प्रश्नः—पहिले प्रहर में साधु साध्वी जी महाराज आहार पानी लेते हैं। वह आहार पानी चौथे प्रहर में उपयोग में लेवे तो दोष लगे कि नहीं ?

उत्तरः—कालाति क्रांत दोष लगे (शास्त्रः—श्री "भगवती जी" मूल के श० ७ उ० १ में)

प्रश्नोत्तर ७२

प्रश्नः—जाति आशिविष किसको कहना तथा कर्म आशिविष किसको कहना ?

उत्तरः—श्री "भगवती जी" सूत्र के श० ८ उ० २ में कहा है कि-विच्छु आदि को "जाति आसिविष" कहना। तपस्या के योग आदि से लब्धि उत्पन्न होती है। उसको "कर्म आसिविष" कहना।

अत्रशंका-जब कोई कहै कि मनः पर्यवादिक भी लब्धि है तो उसको "आशिविष" कैसे कहना ?

तत्रोत्तर-यहां मनः पर्यवादिक लब्धि न समझें। परन्तु जो लब्धि से मनुष्य आदि को घात करें। उसको "कर्म आशिविष" समझना। पुलाक लब्धिवत् समझें।

प्रश्नोत्तर ७३

प्रश्नः— कई एक ऐसा कहते हैं कि-श्री "भगवती जी" सूत्र के श० ८ उ० ५ में श्रावक जी को १५ कर्मादान का प्रत्याख्यान करना कहा है। ऐसा है तो भी श्री "उपाशकदशांग जी" सूत्र में "आनंद जी श्रावक" जी ने ५०० हल का आगार रक्खा तथा सकडाल पुत्र ने ५०० नाई (कुम्हार) का आगार रखा उसका कैसे ?

उत्तरः—जिन श्रावक जी के घर १५ कर्मादान के भीतर का कोई व्यापार नहीं करें। उपः लिखे श्रावकों के

गर "हल" "नाई" का व्यापार था । इसलिये उसकी मर्यादा बांध के उपरांत सर्वथा कर्मादान का प्रत्याख्यान किया है। परन्तु श्री "उपाशक दशांग जी" सूत्र में ५०० हल नहीं । परन्तु ५०० हल की भूमि है । ऐसे ही ५०० नाई नहीं । परन्तु ५०० दुकाने हैं । उसको श्री "पन्नवणाजी" सूत्र में तथा श्री "अनुयोगद्वार" सूत्र में आर्य व्यापार कहा है । उसमें कोई बाधक नहीं ।

प्रश्नोतर ७४

प्रश्न—श्री "पन्नवणा जी" सूत्र में तथा श्री "भगवती जी" सूत्र के श० ८ उ० ६ में कहा है कि-उदारिक शरीर आश्री पांच क्रिया लगें और वैक्रेय शरीर आश्री चार क्रिया लगें तो सूक्ष्म जीव को उदारिक शरीर है । वह मारा मरते नहीं तो उन जीवों को पांच क्रिया कैसे लगें ?

उत्तर:—सूक्ष्म जीव को पांच क्रिया अव्रत आश्री लगें । वह राग द्वेष के प्रमाण रूप नियम से पांच क्रिया लगें । पांच क्रियाएं केवली गम्य ।

[illegible] बैठने का. (५) जाने का. (६) आक्रोश वचन (७) सत्कार सन्मान। यह सात परिषह [illegible] अन्तराय कर्म के उदय एक अलाभ का यह सब मिल कर बाईस परिषह चार कर्म के उदय हैं (शास्त्र: श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० ३० ८ में)

प्रश्नोत्तर. ७६

प्रश्नः—श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० ८ उ० १० में जघन्य, मध्यम तथा उत्कृष्ट ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना कही व कैसे समझनी ?

उत्तर:—ज्ञान की उत्कृष्ट आराधना वाले को दर्शन और चारित्र की मध्यम और उत्कृष्ट आराधना होती है. और उत्कृष्ट दर्शन आराधना वाले को ज्ञान और चारित्र की उत्कृष्ट तथा मध्यम आराधना होती है और चारित्र की उत्कृष्ट आराधनावाले को दर्शन की आराधना उत्कृष्ट नियम से हो और ज्ञान की आराधना तीनों लगे हैं।

प्रश्न :—चारित्र तो उत्कृष्ट अभवी पालते हैं तो उसको दर्शन कैसे नहीं होवे । कैसे कि:—केवल चरिया ऐसा कहा है सो दर्शन ऊपर के न्याय से लगना चाहिये.

उत्तर:—यह बोल अभवी आश्री का है । कारण कि—श्री "समवायांगजी" सूत्र के २६ में समवायांगजी में अभवी मोहनीय कर्म की २६ प्रकृति होती है । मूल से दो प्रकृति की नास्ति है । वह सम्यक्त्व मोहनीय तथा मिश्र मोहनीय यह २ प्रकृति न हो । इस न्याय से अभवी को दर्शन न मिले ।

शंका:—उत्कृष्ट चारित्र तो श्री केवली महाराज को ही होवे तो उनको उत्कृष्ट चारित्र तथा ज्ञान कहना ।

समाधान:—यहां उत्कृष्ट चारित्र, ज्ञान, दर्शन को केवली लेवें तो वह शतक के उसी उद्देशा में उत्कृष्ट आराधनावाला जघन्य उसी भव में मोक्ष जावे और उत्कृष्ट तीन भव में मोक्ष जावे । ऐसा कहा है तो यहां श्री केवली भगवान के लिए तो तीसरा भव कैसा होवे ? इसलिये यहां तो उत्कृष्ट आराधना नीचे अनुसार समझनी ।

उत्तर --जमाली भी भगवान महावीर स्वामी जी का पास आया ऐसा कहा है कि-मैं दूसरे शिष्य की तरह नहीं परन्तु मैं तो केवली होके गया और केवली होके आया ऐसा पाठ कहा है। (शास्त्र:-श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० ९ उ० ३३)

प्रश्नोत्तर-७९

प्रश्न:--कई एक ऐसा कहते हैं कि:-छद्मस्थ अर्थात् ६ बोल हैं। क्रोधादिक चार तथा राग और द्वेष इससे छद्मस्थ?

अत्र शंका—जो ६ बोल हैं इससे छद्मस्थ तो ११ तथा १२ में गुणस्थान वालों को क्या कहना ? कारण कि:— उन ६ में एक भी कारण नहीं। क्योंकि वहां मोहनीय कर्म का उदय नहीं है। उसका क्या अर्थ समझना ?

उत्तर:—"छद" नाम है "स्थ" नाम आच्छादन है जैसे बादलों के जोर से सूर्य आच्छादन रहते हैं। ऐसे ही आत्मा के केवलज्ञानावरणीय कर्म, केवलदर्शनावरणीय कर्म का आच्छादन है। इस लिये छद्मस्थ कहना

प्रश्नोत्तर ८०

प्रश्नः--ईशान इंद्र के यम्मा नामा महाराजा की अग्र महिषी कितनी ?

उत्तरः--नव अग्र महिषी (शास्त्र: स्थान ९ में) श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १० उ० ५ में चार अग्र महिषी कही सो कैसे ?

तत्रोत्तरः——यह पाठ आचार्यों के मतांतर का परक समझना । पीछे तत्त्वार्थ केवली गम्य ।

प्रश्नोत्तर ८१

प्रश्नः—जो कर्म आत्म प्रदेश साथ में ऊपरा ऊपरी थोक लगा है तो भीतर का कर्म प्रथम कैसे निकल सके ।

[illegible] है वह जीव है। वह मिथ्यात्व मोहनीय के उदय से शुद्ध श्रद्धा रक्खे। वह क्षयोपशम भाव से (प्रमाण:—श्री "अनुयोगद्वार" सूत्र की)

दृष्टांत:—कूड़े को सेवे, पूजे वह मिथ्यात्व दृष्टि का उदय है और कूड़े को छोड़ना रुचि लावे और उसको तथा [illegible] वह मिथ्यात्व दृष्टि क्षयोपशम भाव में है। ऐसे ही मोहनीय कर्म समझना।

प्रश्नोत्तर ८३

प्रश्न:—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १२ उ० ५ में पुद्गल को रूपी तथा अरूपी भी कहा है। परंतु पुद्गल रूपी है अरूपी नहीं तो अरूपी कहने का क्या कारण?

उत्तर:—यह बोल अधिक पद पृच्छा की संभव है। दूसरे मत में कहा है कि—सूक्ष्म पुद्गल देखने में नहीं आता उसको अरूपी कहा और देखने में आवे वह पुद्गल रूपी समझना।

प्रश्नोत्तर ८४

प्रश्न—एक आकाश प्रदेश ऊपर कर्मोंका कितना बोल पावे ?

उत्तर—जघन्य पद ४ पावे। (१) धर्मास्तिकाय का प्रदेश. (२) अधर्मास्तिकायका प्रदेश. (३) आधा समयकाल. (४) परमाणु. ये चारों उत्कृष्ट पद ७ पावे। चारों ऊपर के और पुद्गल का स्कंध, देश, प्रदेश यह तीनों बढ़ाकर सब मिलकर ७ पावे, (साक्षी—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १२ उ० ६)

प्रश्नोत्तर ८५

प्रश्न—राहु तथा चंद्रमा की ऋद्धि (संपदा) समान है या कि नहीं ? राहु का विमान कैसे रंग का है और कितना होता है ?

उत्तरः— चंद्रमा राहुकी वृद्धि करता है। कारण कि–चंद्र का विमान को सोलह हजार देवता उठाते हैं और राहुका विमान को आठ हजार देवता उठाते हैं। इससे राहु का विमान छोटा है और चंद्र का विमान बड़ा है। (शास्त्रः–श्री "जीवाभिगमजी" सूत्र की तथा श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १२ उ० ६ में) राहु का विमान चंद्र से चार अंगुल नीचा है और राहु का विमान पांच वर्णका है।

प्रश्नोत्तर ८६

प्रश्नः—सूर्य के विमान को कौन से ग्रह सन्मुख आते हैं जिससे सूर्य का ग्रहण हो ?

उत्तरः—केतु नाम का ग्रह सन्मुख आता है। इस कारण से ग्रहण होता है।

शामिल रहा। यह तीनों द्रव्यों लोक में दूध पानी की तरह शामिल रहते हैं। परंतु हर एक का स्वभाव अलग २ हैं। परन्तु [illegible] नहीं। इसलिये एक आकाश प्रदेश ऊपर धर्मास्ति काय का एक प्रदेश, अधर्मास्ति काय का एक प्रदेश रहा है। ऐसा अन्या अन्य तीना द्रव्यों में रहा है. (शास्त्र:-श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० २५ उ० ४ में बत्ती का दृष्टांत दिया है। जैसे एक बत्ती एक मकान में ऐसी ही २-३-४ बत्तीयें रखदें। इन सब बत्तीयों का प्रकाश रखदें। दूध पानी के समान मिला हुआ है। परंतु अपने २ का स्वभाव से प्रकाश अलग है (२) दृष्टांत:-दूध में स्वाद, रंग, चिकनापणा, [illegible] सब मिला हुआ है। परंतु सब का गुण अलग २ हैं। इस न्याय से तीनों द्रव्यों सत्ता रूप से न्यारा २ समझना। [illegible] एक प्रदेश में पुद्गल स्कंधों से समाय कैसे कि-एक परमाणु यावत् सूक्ष्म अनंत प्रदेशी स्कंध एक आकाश प्रदेश [illegible] में समाता है [illegible] कि-आकाश का विकाश गुण है श्री " नंदीजी " सूत्र में कहा है कि-सब से बड़ा काल, [illegible] उससे छोटा द्रव्य और इनसे छोटा भाव। यह अपेक्षा से समझना।

प्रश्नोत्तर ८७

प्रश्न [illegible] " भगवतीजी " सूत्र के श० १४ उ० ९ में कहा है कि-एक मास की पर्यायवाला साधुजी महाराज

वाणव्यंतर स्थान की "तेजु लेश्या" को अतिक्रमे । ऐसे ही बारह मास की पर्यायवाला सर्वार्थसिद्ध विमान के देवता की "तेजु लेश्या" का अतिक्रमे तो तीसरा देवलोक में "तेजु लेश्या" नहीं तो किस रीति से अतिक्रमे ?

उत्तर:—तेजं लेश्या अर्थात् तेजु लेश्या समझने की नहीं है। परंतु उसका सुख वैभव समझना अर्थात् एक मास की पर्यायवाला साधुजी महाराज वाणव्यंतर का देव जितना सुख अनुभवे। इससे विशेष सुख अनुभवे। ऐसे ही यावत पांच अनुत्तर विमान तक समझें।

अत्रशंका:—एक मास की पर्यायवाला वाणव्यंतर के स्थान को व्यतिक्रमे तो पुंडरीक अणगार गजसुकुमालजी और धन्नाजी अणगार वगैरह मोक्ष तथा अनुत्तर विमान में अल्प चारित्र होने से कैसे गये ?

तत्रोत्तर:—पूर्वोक्त बोल केवल चारित्र आश्री है। तप आश्री नहीं है। पुंडरीक वगैरह उत्कृष्ट तप किया इससे ही अनुत्तर विमान में तथा ही मोक्ष में गये। और केवल चारित्र पाले और तप न करें तो पूर्वोक्त अनुसार सुख का अनुभव करें।

प्रश्नोत्तर ९८

प्रश्न:—अवधिज्ञान वाला अगले पिछले कितने काल की बात करें ?

उत्तर:—असंख्याता काल की बात करें (शास्त्र:-श्री "नंदीजी" सूत्र की तथा श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १५ में श्री सुमंगल मुनिवत)

प्रश्नोत्तर ९९

प्रश्न:—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १६ उ० ६ में श्री जिनराज देव ने पांच प्रकार के स्वप्न दर्शन प्ररूपणा किया है तो यह स्वप्न में जो २ पुद्गल देखने में आते हैं । यह तीनों प्रकार के पुद्गलों मांहिला कौनसा जाति का पुद्गल समझना ?

मिथ्या दृष्टि" देवता विभंगज्ञान वाले देवता देवीयों का रूप बनाते हैं। परन्तु श्रद्धने में फरक समझने कि है। जैसे यह रूप बहुत देवता का हुआ। परंतु स्त्री सहित है। ऐसा यथातथ्य नहीं श्रद्धे कारण कि-पर्याय में हीनता है। इससे फर्ता आप है और तप में पर्याय की हानि के लिये विभ्रम मानते हैं।

प्रश्नोत्तर १०२

प्रश्नः—बारह देवलोक आदि देवता मन मान्या वैक्रय रूप मनोवाञ्छित कर सके या कि नहीं ?

उत्तरः—सम्यक्त्व जीव मनोवाञ्छित रूप कर सकें। परंतु मिथ्या दृष्टि मन मान्या रूप करने की समर्थ नहीं है. (शास्त्रः-श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १८ उ० ५ में कहा है)

प्रश्नोत्तर १०३

प्रश्न [illegible] की कुंभी में एक जीव आकर उत्पन्न हुआ है और वह जीव निकल गये पीछे उनके जीता रहता [illegible] कुंभी में उपजे कि नहीं ?

[illegible] नारकी की कुंभी में उत्पन्न हुआ जीव बाहिर निकला और अन्यतक जाता है। परंतु उसी कुंभी में दूसरा [illegible] कि-नारकी में कुंभी का मालिक पना नहीं है (शास्त्रः-श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १८ उ०६) [illegible] उपधि कही तथा २ परिग्रह कहा है. (१) शरीर. (२) कर्म. यह दो कहा है। परंतु बाह्य उपकरण [illegible] एकेन्द्रिय के ३ उपधि तथा ३ परिग्रह कहा है: (१) शरीर. (२) कर्म. (३) बाहिर उपकरण [illegible] का मालिकपना है। परंतु नारकी के कुंभी का मालिकपना नहीं। इसलिये नारकी जीता हो तोभी [illegible] दूसरा नारकी उत्पन्न हो सकता है।

प्रश्नोत्तर १०४

प्रश्न—अठारह पाप का वेरमणं तथा पांच समिति, तीन गुप्ति वगैरह धर्म कर्तव्य श्री भगवान ने श्री "भगवती" जी सूत्र के श० २० उ० २ में धर्मास्ति काय करके बुलाया वह कैसे ?

उत्तर:—यह बोल धर्म के सहचारी शब्द रूप से हैं। इसलिये धर्मास्ति काय कहा है। ऐसे ही अधर्मास्ति काय उनका प्रतिपक्षी समझना। अधर्मास्ति काय अधर्म सहचारी शब्द रूप से समझना।

प्रश्नोत्तर १०५

प्रश्न:—प्रत्येक मास अर्थात् एक वर्ष और ग्यारह महिने तक का मनुष्य गर्भज मरके कौनसे देवलोक में जावे ?

उत्तर —सातवीं नरक तक जावे (शास्त्र: गमा की है)

प्रश्नोत्तर ११०

प्रश्न —अंगुल के असंख्याता में भाग की अवगाहना वाला तिर्यंच मरके कौनसी नरक तक जावे ?

उत्तर: —सातवीं नरक तक जावे (शास्त्र: गमा की है)

प्रश्नोत्तर. १११

प्रश्न —पृथ्वी काय में समय समय असंख्याता जीव उत्पन्न हो ऐसा श्री भगवान ने कहा है और संख्याता जीव भी समय समय उपजना कहा है। इसमें कौनसी अपेक्षा से समझना ?

उत्तर:—कम स्थिति वाला असंख्याता पृथ्वी काइया उपजे और बाईस हजार वर्षकी स्थितिवाला संख्याता उपजे। ... कहा है (शास्त्र:-श्री "पन्नवणाजी" सूत्र तथा श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० २४ उ० १२)

प्रश्नोत्तर, ११२

प्रश्न:—पांच लेश्या केवल कौनसी जगह में पाइये ?

उत्तर:—संज्ञी तिर्यंच का पर्याप्ता जघन्य अंतर मुहूर्त की स्थिति वाला मरके तीसरे, चौथे तथा पांचवें देवलोक में उपजे। वह जीवको पांच लेश्या पावे. (शास्त्र:-श्री "भगवतीजी" ...)

उत्तरः—उत्कृष्ट तीन भव करे। पीछे चौथे भव में जरूर मोक्ष में जावे. (साख:—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० २५ उ० ६) इसी तरह सर्व संसार में आकरखा उत्कृष्ट पांच वार करके मोक्ष में जावे ऐसा कहा है।

प्रश्नोत्तर ११५

प्रश्नः— एक भव में ग्यारहवें गुणस्थान से एक जीव पड़ कर पीछे ग्यारहवें गुण स्थान में जाकर पीछे फिर पड़े कि नहीं?

उत्तरः—पड़े। परन्तु बहुत भव करने वाला पड़े। परन्तु उसी भव में मोक्ष जाने वाला एक वार पड के दूसरी वार दशवां गुणस्थान से सीधा बारहवां गुणस्थान में जाकर तेरहवां गुणस्थाने केवल पावे। परन्तु पांच आकरखा वाला और एक भव में दो वार उपशम श्रेणी करे। साख:— श्री " भगवती जी " सूत्र के श० २५ उ० ६)

प्रश्नोत्तर ११६

प्रश्न:—कई कहते हैं कि- श्री केवली महाराज का साहारण होता है वह कैसे ?

उत्तर.—श्री केवली महाराज का साहारण नहीं होता कारण कि- सात बोल का साहारण नहीं होता । उस में कहा है कि- अवेदी का तथा अप्रमादि का साहारण नहीं है तो श्री केवली महाराज अवेदी हैं । इसलिये श्री केवली महाराज का साहारण नहीं होता और श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० २५ उ० ६ में कहा है कि- "साहारण पडुच्च नियंठा" पावे अर्थात साहारण आश्री स्नातक कहा है अशोच्यावत् समझना । छद्मस्थका साहारण हो पीछे वहां श्री केवली महाराज हो । वह अपेक्षा से कहा है । परन्तु श्री केवली महाराज का साहारण न समझें ।

प्रश्नोत्तर ११७

प्रश्न:—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० २५ उ० ६ - ७ में "सज्या" और "नियंठा" कहा है । उस शब्द का

अर्थः " संज्या " नाम साधुजी महाराज और " नियंठा " नाम निग्रंथ। परन्तु दोनों का भावार्थ एक ही है तो अलग अलग मरूप ने का क्या कारण समझना ?

उत्तरः—दोनों का गुण अलग २ है। " संज्या " का गुण चारित्र की क्रिया कर्ता रूप है और " नियंठा " का गुण जिम जिम क्षयोपशम होता जावे तिम तिम "नियंठा" का गुण बढ़ता जावे तो "नियंठा" का दर्जा है। जैसे कि-सामायिक चारित्र तो एक ही है। परन्तु उस चारित्र वाले के "नियंठा" का क्षयोपशम हुआ। इस अपेक्षा से दोनों का गुण अलग २ समझना।

प्रश्नोत्तर ११८

प्रश्नः—अभी वर्तमान काल में साधुजी महाराज के कितना नियंठा पावे ?

उत्तरः— ३ नियंठा पावे (१) बकुश (२) पडी सेवणा (३) कषाय कुशील । यह तीनों नियंठा पावे।

अथ शंका—कषाय कुशील नियंठा वाला जीव मूल उत्तर गुण अपडी सेवी कहा है और बकुश, पडी सेवणा तीनों [illegible] विरुद्ध कहा है यह कैसे ?

समाधानः—कषाय कुशील नियंठा वर्तता जीव साधुजी महाराज के सर्व गुण से वर्तता हुआ एवं मोहनीय कर्म [illegible] उदय कषाय भाव । इस से उस समय अशुद्ध प्रथम की तीनों लेश्या में प्रवर्ते । परन्तु यह नियंठा वाला उत्तर गुण में दोष लगावे नहीं और बकुश, पडी सेवणा नियंठा वाला जीव मूल उत्तर गुण के दोष को सेवे । वह चारित्र मोहनीय [illegible] उदय [illegible] उदासी भावे पश्चाताप करता हुआ । इस कारण उस नियंठा में ऊपर की तीनों शुभ लेश्या [illegible] है । इस लिये इस न्याय से ऊपर के प्रमाण अनुसार नियंठा तीनों वर्तमान काल में पावे (शाख: श्री "भगवती" [illegible])

प्रश्न.-श्री " भगवती " जी सूत्र के श० २५ उ० ७ में सूक्ष्म संपराय चारित्र की प्राप्ति करे । वह जीव जघन्य एक भव करे और उत्कृष्ट तीन भव करे और उसका अंतर अर्द्ध पुद्गल का कहा यह कैसे ?

उत्तर-अंतरा पडवाई आश्री है ।

अत्रशंका -तिवारे पडवाई जीव पड कर पीछे अवश्य तीसरे भव में मोक्ष में जाना चाहिये तो अंतरा कैसे गिने ?

तत्रोत्तर-तीन भव कहा वह तो सर्व संसार आश्री जानना । सर्व संसार में एक जीव सूक्ष्म संपराय चारित्रपणो भव करे सो उत्कृष्ट तीन भव करे और तीसरे भव में अवश्य मोक्ष में जावे । पीछे पडे नहीं । ऐसे ही आकर्षो भी सर्व

संसार में जघन्य २ और उत्कृष्ट ६ कही है जीव आश्री तो वह सर्व संसार एक जीव सूक्ष्म संपराय चारित्रपणा का तीन भव करै। परन्तु पदवाई आश्री अंतरा जानना। परंतु अपदवाई आश्री अंतरा समझना नहीं।

प्रश्नोत्तर १२०

प्रश्न—पुलाक नियंठा का बहुत जीव आश्री जघन्य एक समय की स्थिति कही वह किस आश्री ?

उत्तरः—एक जीव पुलाकपणुं पायो है वह अंतर मुहूर्त की स्थिति भोक्ता पीछे एक समय बाकी रहे तत्पश्चात् ... पुलाकपणुं पायो उसके पीछे पहिला जीव एक समय शामिल रह कर दूसरे नियंठे जावे इस आश्री जघन्य एक समय की स्थिति बहुत जीव आश्री कही है (शाखः श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० २५ उ० ७)

प्रश्नोत्तर १२१

प्रश्न—श्री सामायिक चारित्र की स्थिति तथा गति कितनी ?

उत्तर—श्री "भगवती" जी सूत्र के श० २५ उ० ७ में जघन्य स्थिति एक समय और उत्कृष्ट क्रोड पूर्व देश उणी कही है और गति जघन्य पहिले देवलोक और उत्कृष्ट बारहवें देवलोक तक जावे ऐसा कहा है।

प्रश्नोत्तर १२२

प्रश्न—चौदह पूर्व सम्पूर्ण पढ़ने वाला मर के कहां जावे ?

उत्तर—जघन्य छठे देवलोक उत्कृष्ट सर्वार्थसिद्ध विमान तक और मोक्ष में भी जावे।

अत्र शंका—इसके पश्चात् कोई कहै कि श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १८ उ० २ में कहा है कि "कार्तिकसेठ" का जीव चौदह पूर्व पढ़ के पहले देवलोक में गया सो कैसे ?

उत्तर.—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० २५ उ० ७ में कहा है कि श्री सामायिक चारित्र और छेदोपस्थापनिक चारित्र वाला पढ़े तो जघन्य आठ प्रवचन माता और उत्कृष्ट चौदह पूर्व संपूर्ण पढ़े और वह मर के जघन्य पहिले देवलोक उत्कृष्ट श्री अनुत्तर विमान तक जावे तो "कार्तिक सेठ" का जीव पहले देवलोक गया तो शास्त्र विरुद्ध नहीं है। पीछे तत्त्वार्थ [illegible] कहते आये हैं कि—विस्मृति पूर्व की होने से पहिले देवलोक में गया है।

[illegible]

प्रश्नोत्तर १२३

प्रश्न—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० २६ उ० १ में कहा है-कि श्री केवली महाराज पहिले समय शातावेद-

समय बांधे, दूसरे समय वेदे और तीसरे समय निर्जरा करें तो जिस समय वेदे तिस समय बांधे अथवा निर्जरा करें अथवा बांधे उस समय वेदे, अथवा निर्जरा करें, और जिस समय निर्जरा करें उस समय बांधे अथवा वेदे उसका क्या विवरण है।

उत्तर—शातावेदनीय का बंध पहिले समय में बांधे, उस समय में वेदे नहीं और निर्जरा करें भी नहीं। परन्तु दूसरे समय में बांधे उस के संयुक्त पहिले समय की शातावेदनीय बंधी हुई वेदे। तैसे ही तीसरे समय निर्जरा करें और दूसरे की वेदे। इसी अनुक्रम से होते हुए ३ बोलों संयुक्त बांधे, वेदे तथा निर्जरा करें। एक समय में समझना, परंतु पहिले समय में बांधने का समझना और तीसरे समय निर्जरा का समझना।

अन्नशंका—कोई कहे कि "श्रीभगवतीजी" सूत्र में कहा कि- एक समय में दो क्रिया न होवे और करें तो निरुद्ध

उत्तर—देवताओं में आवे। परंतु वाणव्यंतर देवता में बारह हजार वर्ष की स्थिति में उपजे (शास्त्र श्री "उववाई" सूत्र तथा श्री "भगवती" जी सूत्र के श० ४१ उ० १ में कहा है)

प्रश्नोत्तर १२५

प्रश्न—देवता के चलने की गति कितने प्रकार की है?

उत्तर—पांच प्रकार की है। [१] सर्वाग [२] चंडा [३] जाया [४] वेगा [५] शीघ्र यह पांच प्रकार की चलने की गति समझना।

प्रश्नोत्तर १२६

प्रश्न.—असंख्याता योजन के विमान में देवता छः महीने तक चले। परन्तु पार नहीं पावे वह गति किस प्रकार की समझना?

प्रश्नोत्तर १२७

प्रश्न —क्या भाषोभाव सिद्ध बिना किसको होवे ?

उत्तर.—पंचेन्द्रिय पर्याप्त को होवे (शास्त्रः-श्री " भगवतीजी " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर १२८

प्रश्नः—श्री " भगवतीजी " सूत्र में ऐसा कहा है कि-रत्न प्रभा पृथ्वी विषय पृथ्वी का जीव मर के पहिले देवलोक में पृथ्वीपणे उपजे? इस रीति से श्री "गौतम स्वामीजी" ने पूछा तिसरे श्री "भगवान् महावीर स्वामीजी" ने कहा कि—उपजे; यावत् ईश प्रभा पृथ्वी तक पृथ्वीपणे उपजे, तैसे ही अपना जीव उपजे इस नव ग्रैवेयक में तथा श्री अनुत्तर विमान में पानी नहीं है तो यहां अपना जीव के उपजने की या क्या बात है ?

[illegible] जो प्रदेश उदय में था वह विपाक उदय में आया। इसलिये वहां से मरके वहां मनुष्य भव में [illegible] श्री अनुत्तरवासी देवता में स्त्री वेद बंधने का कारण जो माया कपट है सो वहां नहीं है और [illegible], वह भाव तिहां भी नहीं है। इसलिये यहां मनुष्य भव में वे स्त्री वेद बांधते हैं ऐसा [illegible] ज्ञाताजी" सूत्र के अध्ययन ८ में) श्री मल्लिनाथ भगवान के अधिकार में, श्री महाबल मुनि [illegible] आया, और वहां से मर के श्री अनुत्तरवासी देवता हुआ तो वहां पुरुष वेद का विपाक [illegible] प्रदेश उदय था कारण कि-स्त्री वेद का आबाधा काल १८ हजार वर्ष का है। पीछे अवश्य [illegible] पीछे स्त्री वेद का उदय हुआ। परंतु वेद का विपाक उदय है। इसलिये स्त्री वेद प्रदेश [illegible] किया पीछे वहां से मर के श्री मल्लिकुंवरीपणे उपजा, वहां स्त्री वेद का जो प्रदेश उदय था वह विपाक उदय हुआ। परन्तु श्री मल्लिनाथ भगवान ने वहां श्री अनुत्तरवासी देव में स्त्री वेद बांधा नहीं है। श्री महाबल मुनि के भव में बांधा है। ऐसे ही श्री मल्लिकुंवरी के भव में उदय आया, इस कारण से श्री अनुत्तरवासी देवता यहां स्त्रीपणे उपजा है।

[illegible] धर्म की श्रद्धा जाने से भी नाश होवे तथा उत्कृष्ट मोहनीय कर्म के उदय भी सम्यक्त्व का नाश हो तथा तीव्र कषाय के उदय से नाश हो।

अत्र शंका—श्री " ज्ञाताजी " सूत्र के अध्ययन ८ में श्री महाबल मुनि की क्या देव गुरु की श्रद्धा गई?

तत्रोत्तर:—माया सेवने से मिथ्यात्व मोहनीय कर्म उदय हुआ तथा भाव मिथ्यात्व आया इस कारण से स्त्री वेद का बंध पड़ा इत्यर्थ।

प्रश्नोत्तर १६६

प्रश्न:—श्री कृष्ण महाराज धातकीखंड में गया तब गंगा नदी सन्मुख नहीं आई, और पीछे आता गंगा नदी सामने आई इसका क्या कारण ?

उत्तर:-श्री कृष्ण महाराज धातकीखंड में जब जाते गंगा नदी के दक्षिण किनारे होके पूर्व समुद्र में होके गया और पीछे आता गंगा नदी के उत्तर के किनारे लवण समुद्र में से पूर्व के तीसरा खंड में आया और यहां से मध्य खंड में आता नदी उतरनी पड़ी। इसलिये बीच में आई।

अत्रशंका-जंबुद्वीप के नक्शे में गंगा सिंधु नदी का आकार दक्षिण समुद्र मिलाया है और श्री " ज्ञाताजी " सूत्र में कहा है कि पूर्व की तरफ गया तो पीछे जाते वक्त और आते दोनों ही वक्त नदी उतरनी चाहिये ?

तत्रोत्तर:-श्री " जंबुद्वीप पन्नति " सूत्र में कहा है कि- गंगा नदी, गंगा प्रताप कूट के दक्षिण के तोरण में से निकल के वैताढ भेद दक्षिणार्ध भरत में वनिता नगरी तक एक लाईन में दक्षिण दिशा में चली और वनिता नगरी की सीमा से सीधी पूर्व दिशा में गई उस कारण से जाते वक्त नदी नहीं आई, किनारे होकर गया इसलिये [शाख:- श्री " ज्ञाताजी " सूत्र के अध्ययन १६]

प्रश्नोत्तर १३७

प्रश्नः—श्री पार्श्वनाथ भगवान् की आठ साध्वीजी महाराज विराधिक हो के दूसरे देवलोक में कैसे गई ?

उत्तरः—श्री पार्श्वनाथ भगवान् की साध्वीजी महाराज देश से विराधिक हैं। परंतु बकुश निपंठा संभव है। उसका लक्षण शुश्रूषा करने का है उस कारण से सर्व से विराधिक नहीं कारण कि एक भवतारी हैं। इसलिये देश से विराधिक दूसरे देवलोक में उत्पन्न हुई है। उसमें कोई बाधा नहीं।

(शास्त्र: श्री "ज्ञाताजी" सूत्र के अध्ययन १६ में सुकुमालिका साध्वीजी महाराज दूसरे देवलोक में गई इस न्याय से)

प्रश्नोत्तर १३८

प्रश्नः—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० २ उ० १ में कहा है कि—विराधिक संयमी उत्कृष्ट पहिले देवलोक में

जाये। श्री "ज्ञाताजी" सूत्र के अध्ययन १६ में सुकुमालिका साध्वीजी महाराज विराधिक तो भी दूसरे देवलोक में गई यह कैसे ?

उत्तर—यह देश से विराधिक है और भद्रिक परिणाम से गई। ऐसे तो पहिला और दूसरा देवलोक सहचारी है, इसलिये गई है।

प्रश्नोत्तर १२९

प्रश्न.—नाग श्री ब्राह्मणी कब हुई ?

उत्तर—गत अनंतकाल में हुई (शास्त्र: सोनाला की) पीछे संसार में परिभ्रमण किया। इसलिये अनंतकाल का यहाँ समय है। शास्त्र: श्री "ज्ञाताजी" सूत्र में नाग श्री ब्राह्मणी के अधिकार में अध्ययन १६ में है।

प्रश्नोत्तर १४७

प्रश्नः—श्री "उपाशक" दशांगजी" सूत्र के प्रथम अध्ययन में श्री आनंदजी श्रावक के अधिकार में ५०० हलवा जमीन खुल्ली रक्खी तो ५०० हलवा का कोस कितने और छट्ठा व्रत की मर्यादा कितनी कि ?

उत्तरः—५०० हलवा जमीन का ओरस चोरस १२५० कोस जमीन खुली रखी है उसकी गणना १० हाथ का १ विस्वा। २० विस्वा का १ नियत+१०० नियत का १ हलवा। ऐसा ५०० हलवा जमीन खुली रक्खी है। ऐसे ही छट्ठा पांचवां व्रत के शामिल संभव है।

अलशंका—यदि कोई ऐसा कहै कि—ऊंचा, नीची, तिरछी दिशा का प्रमाण कहा नहीं। इसलिये छट्ठा व्रत नहीं गणना चाहिये ?

तत्रोत्तर—छट्ठा व्रत पांचवां व्रत के भीतर नहीं गिनते हो तो पिछे छट्ठा व्रत के अतिचार की जरूरत नहीं

प्रश्नोत्तर. १४२

प्रश्नः- श्री "उपाशक दशांग" जी सूत्र में कहा है कि-श्री सकडाल पुत्रने गोशाला को पाट, पाटीया दिया, वह छः आगार में से कौनसे आगार से दिया ?

उत्तरः-'गुरु निग्गहेणं" इसका अर्थः-गुरु का गुणग्राम किया इसलिये दिया है तो ६ आगार में से ऊपर के बोल म गुण स्तुति मालूम होती है। इसलिये वह बोल के आगार से दिया है।

अलशंका——धर्म जान के नहीं दिया ?

तत्रोत्तर—तो क्या पाप जान के दिया ? जो पाप जान के मिथ्यात्व सेवे तो सम्यक्त्व जावे, पाप जानके मिथ्यात्व सेवता सम्यक्त्व न जावे, तो छः आगार रखने का क्या कारण। अहो ? हमारे प्रिय बन्धु अति विचार करके देखिये।

प्रश्नोत्तर १४४

प्रश्नः—श्रावकजी का प्रतिक्रमण का दोष कितना और कौन २ से ?

उत्तरः—दोष १२४ कहते हैं। ज्ञान का अतिचार ८५। तप का १२। वीर्य का ३। यह १०० अतिचार ज्ञान के ८ कहते हैं। (१) काल के काल पढ़े (२) विनय से पढ़े (३) बहुत मान कर के पढ़े (४) सूत्र सिद्धांत पढ़ते तप करें। (५) उपकारी का उपकार छिपावे नहीं। (६) व्यंजन सहित पढ़े। (७) अर्थ सहित पढ़े (८) सूत्रार्थ संयुक्त पढ़े। यह ज्ञान का आठ हुआ। अब दर्शन का ८ कहते हैं (१) तत्त्व की शंका न लावे। (२) अन्य का धर्म न वांछे (३) फल का संदेह न लावे (४) मिथ्यात्व का धर्म की महिमा देख कर वांछा न करे (५) धर्मवंत का गुण ग्रहण करें (६) धर्म से गिरते को स्थिर करें (७) स्वधर्मी का हितकारी हो (८) आठ प्रवचन माता की प्रभावना करे। यह आठ दर्शन का हुआ। अब चारित्र का ८ कहते हैं। पांच समिति, तीन गुप्ति। यह आठ चारित्र का हुआ। सर्व मिल कर १२४ दोष टाल के श्रावकजी को प्रतिक्रमण करना चाहिये।

उत्तर.—श्री ज्ञाता जी" सूत्र में बत्तीस हजार स्त्रियों कही वहां "महिला" ऐसा पाठ है, इसलिये राज पुत्री तथा सेठ साहूकार सामानिक राजा की पुत्री सर्व जाने तथा श्री "अन्तगडजी" सूत्र में सोलह हजार स्त्रियों कही वहां "देवी" ऐसा पाठ है इसलिये बड़ा राजा की पुत्री समझना चाहिये।

प्रश्नोत्तर १४७

प्रश्न —प्राणातिपात आदि पांच प्रकार के पाप और पांच प्रकार के आश्रव। यह दोनों में क्या फरक समझना?

उत्तर— प्रथम हिंसा करने का जो भाव बने वह भाव आश्रव और हिंसा कि इसलिये पाप हुआ और और वह पाप से आया कर्म उसको द्रव्य आश्रव समझना। इस अनुसार दोनों का गुण अलग २ समझना (साक्षः श्री व्याकरण" जी सूत्र की प्रथम अध्ययन)

उत्तर:—श्री मरुदेवी माताजी की अवगाहना नाभि राजा से छोटी है कारण कि-उत्तम स्त्री की अवगाहना पुरुष से चार अंगुल, आत्म अंगुल से छोटी होती है-श्री "प्रश्न व्याकरणजी" सूत्र के अ० ४ में कहा है इसलिये श्री मरुदेवी माताजी मोक्ष में गई वह विरुद्ध नहीं है तथा अन्य मतवाले ऐसा कहते हैं कि-हाथी के होदा ऊपर बैठे मोक्ष में गई है। इसमें "मज्झम घन पढे" इसलिये विरुद्ध नहीं।

प्रश्नोत्तर १५०

प्रश्न:—श्री केवली महाराज जिस जगह बैठे उसी जगह बैठे हुये कपाटादिक करें कि-मेरु पर्वत पास जाकर पीछे कपाटादिक करें ?

उत्तर—श्री केवली महाराज जिस जगह बैठे उसी जगह दंड कपाटादिक, मंथाणादिक में मेरुपर्वत आजाता है. स्पर्श के आश्री. (साख:-श्री "पन्नवणाजी" सूत्रकी)

प्रश्नोत्तर १५१

प्रश्न—श्री केवली महाराज दंडादिक करके सर्व प्रदेश निकालते हैं तो रूचक प्रदेश बाहिर निकले या नहीं ?

उत्तर:—आठ रूचक प्रदेश बाहिर न निकले और जो आठ रूचक प्रदेश बाहिर निकले तो फिर पीछे आवे नहीं क्योंकि मरण होजावे। इसलिये रूचक प्रदेश मरण सिवाय बाहिर न निकले. (शास्त्र:-श्री "उववाईजी" सूत्र की)

प्रश्नोत्तर १५२

प्रश्न—श्री "उववाईजी" सूत्र में कहा है कि-जघन्य सात हाथ वाला मोक्ष और श्री "नवतत्त्व" में कहा कि-दो हाथ वाला मोक्ष और सिद्धों की अवगाहना जघन्य एक हाथ और आठ अंगुल की कही तो दो हाथ वाला बैठे मोक्ष तो जघन्य कहीं हुई का "घन" कैसे पड़े तथा नव वर्ष वाला की अवगाहना सात हाथकी किसप्रकार से हो ?

प्रश्नोत्तर १५६

प्रश्न —कितनेक ऐसा कहते हैं कि–श्रावक के १४ प्रकार के दान में ६ प्रकार की वस्तु पाडिहारी लेनी कल्पे है यह कौनसे सूत्र में लिखा है ?

उत्तरः–श्री "उववाईजी" सूत्र में श्रावक के प्रश्नोत्तर का अधिकार में कहा है कि–"पाडिहारियं पीढ फलग सेज्या संथारयणं उसह भेसजेणं" यह छः वस्तु पाडिहारी लेनी कल्पे। परंतु आहार पानी मुखवास फल आदि लेना न कल्पे (शाखः–श्री "उववाईजी" सूत्र की)

प्रश्नोत्तर १५७

प्रश्नः—आहार भजा जीव पास है तो भी अणाहारिक कहा वह किसको समझना चाहिये ?

प्रश्नोत्तर १५८

प्रश्न — श्री "राय पसेणी" जी सूत्र में श्री केशी कुमार के चार ज्ञान कहा है। वह केशी कुमार तथा श्री "उत्तराध्ययन जी" सूत्र के अध्ययन २३ में केशी कुमार के तीन ज्ञान कहा है। यह दोनों ही केशी कुमार अलग २ मानना या एक ?

उत्तर — चार ज्ञानवाला श्री केशी कुमार हुआ, उन्हों ने चार महाव्रत रूपी धर्म "परदेशी राजा" को पास [illegible] किया और तीन ज्ञानवाला श्री केशी कुमार श्री गौतम स्वामीजी से मिला।

अत्रशंकाः=—युगलिया के आहार की सरसाई उसी सूत्र में बहुत ही वर्णन की है। इससे अवर आहार करने में बहुत संतोष पावे है। इस लिये बेर प्रमाण आहार करना विरुद्ध नहीं समझना चाहिये।

तत्रोत्तर:—उसी सूत्र में वारुणी समुद्र का पानी का वर्णन किया है कि—उसकी हवा केवल मनुष्य इन्द्रिय से ले तो बहुत ही नशा आजावे कहा है तो उसी समुद्र में रहने वाला तिर्यंच वह ही पानी रोज पीते हैं। परन्तु उन तिर्यचों के नशा चढ़ता नहीं तो इस न्याय से और क्षेत्र का आहार रस वाला है सो वहां क्षेत्रों का मनुष्य भी ऐसा रस वाला आहार पचने की तीव्र शक्ति है इस लिये युगलिया के बेर जितना आहार घटे नहीं परन्तु अपने २ का शरीर प्रमाण आहार समझना चाहिये।

प्रश्नोत्तर १६२

नारकी, देवता के संघयण कहा वह कैसे ?

उत्तरः— श्री " जिवाभिगमजी " सूत्र में नारकी, देवता को असंघयणी कहा है वह वैक्रेय शरीर आश्री, कारण कि— संघयण तो उदारिक शरीर वालों के है और उदारिक शरीर वालों के हड्डी, मांस तथा खून है और वैक्रेय शरीर वालों के हड्डी, मांस तथा खून नहीं । इसलिये असंघयणी कहा है । श्री " पन्नवणाजी " सूत्र में कहा वह पुद्गल संघयण पणे प्रणमें है और श्री " उत्तराध्ययनजी " सूत्र के अ० १९ में नारकी को खून कहा वह नारकी का शरीर अशुद्ध पुद्गल का बना हुआ है वह ही शरीर को छेद के उसको खावे । इसलिये मांस खून समान कहा जैसे कि बादर अग्नि तो केवल अढाई द्वीप है और उसी अध्ययन में नारकी के विषय हुताशन अर्थात् अग्नि कही है वह जैसे वैक्रय अग्नि जानना । ऐसे ही नारकी के शरीर का अशुभ पुद्गल का मांस कहा है ।

प्रश्नोत्तर १९३

प्रश्नः— नारकी का जीव वैक्रय रूप बहुत कर सक्ते हैं या कि नहीं ?

उत्तर:— पांचवीं नरक तक एक रूप वैक्रेय करें तथा बहुत रूप शस्त्र का बनाते हैं और छट्ठी सातवीं नरक वाला कुंथु आदिक का रूप बनाते हैं। परंतु संख्याता करें और असंख्याता न करें (शास्त्र:- श्री " जीवाभिगमजी " सूत्र में चोथे बोल के अधिकार में है)

प्रश्नोत्तर, १६४

प्रश्न:— नारकी, तिर्यच मनुष्य तथा देवता का बनाया हुआ वैक्रेय रूप कितना काल रहे ?

उत्तर:— नारकी को एक अन्तर मुहूर्त रहे। मनुष्य तिर्यच को एक महर, और देवता का १५ दिन रहे (शास्त्र: श्री " जीवाभिगमजी " सूत्र की चौथी मति वृति नारकी के अधिकार में उ० ३)

प्रश्नोतर १६५

प्रश्न — युगलिया के निहार को लेप लगते हैं या नहीं ?

उत्तर — न लगे (शास्त्र- श्री " जीवाभिगमजी " सूत्र की युगलिया के अधिकार में)

प्रश्नोत्तर १६६

प्रश्न:—आहारिक शरीर का सर्व जीव आश्री अन्तर पड़े तो कितना पड़े ?

उत्तर:—जघन्य एक समय उत्कृष्ट छः मास का (शास्त्र: श्री " जीवाभिगमजी " सूत्र छपी हुई टीका का पन्ना ... ॥ है)

प्रश्न — तिर्यंच पंचेन्द्रिय का २० भेद है उस में युगलिया के क्षेत्रों में कितने भेद पावे ?

उत्तर स्थलचर गर्भज का २ भेद तथा खेचर का २ भेद । यह चार भेद तिर्यंच का युगलिया में पावे ।

शंका — अब कोई कहे कि— दूसरा कैसे नहीं पावे ?

उत्तर:— पानी का तिर्यंच की स्थिति कम है अर्थात् उत्कृष्ट पूर्व क्रोड की कही है तो स्थिति वाला तो कर्म भूमि में होता है और स्थलचर खेचर की स्थिति पूर्व उपरांत की है तो वह भी युगलिया पणे पावे है । इसलिये चार भेद लिये है, परंतु दूसरा भेद तिर्यंच का पावे । युगलिया में तो ऊपर का बताये हुए ही चार भेद पावे । (शास्त्र:- श्री " जीवाभिगमजी " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर १९८

प्रश्न:- श्री "जीवाभिगमजी" सूत्र में तिर्यंच भव धारणी अवगाहना से उत्तर वैक्रिय की अवगाहना कम कही है सो?

उत्तर:- तिर्यंच आश्री शाश्वता भाव ऐसा ही समझा जाता है कि- हजार योजन वाले उत्तर वैक्रिय न करें। परन्तु हजार योजन से न्यून वाला उत्तर वैक्रिय करें तो नव सौ योजन तक शक्ति प्रमाण से करें। ऐसा समझा जाता है। पीछे तत्त्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर १९९

प्रश्न:—श्री केवली महाराज आहार कहां तक करें?

प्रश्नोत्तर, १७४

प्रश्न —छपा हुआ "बाईस थोकडे" में नव तत्व में कहा है कि–छप्पन अंतर द्वीप का मनुष्य किसको कहना चाहिये ? नीचे समुद्र है और ऊपर अधर डाढा में द्वीप के रहने वाला है ऐसा कहा यह कैसे ?

उत्तरः—छप्पन अंतरद्वीप का मनुष्य डाढा ऊपर नहीं है। सात २ द्वीप की पंक्ति है और टेढी टेढी होने से डाढा के आकार से रहेल है और जो तुम्ह डाढा कहते हो तो कौन से पर्वत में से निकली कैसे कि--चूलहिमवंत पर्वत तथा शिखरी यह दो पर्वत में से निकली हो तो वह पर्वत लंबा २३ हजार ३३२ योजन लंबा चाहिये वह तो नहीं कहा परंतु लंबा तो श्री जिनराज देव ने २४९३२ योजन कहा है। इसलिये समझना नहीं और द्वीप उसका अर्थ यहां पर ऐसा समझना कि--चारों तरफ पानी हो और बीच में जो पर्वत ऊपर गांव हो उसको द्वीप कहते हैं ऐसे ही लौकिक में उसको भी द्वीप कहते हैं (साख: श्री "जीवाभिगम जी" सूत्र की)

प्रश्नः—लवण समुद्र में मनुष्य का वास कितने योजन तक है ?

उत्तर—१८०० योजन तक है।

प्रतिशंका:—अन्तर द्वीप ८४०० योजन लवण समुद्र में है। ऐसा कहा यह कैसे ?

समाधान:—श्री "जीवाभिगम जी" सूत्र में अन्तर द्वीप के अधिकार में कहा है कि जंबू द्वीप की जगति से ३०० योजन लवण समुद्र में जावे जिसे पहिला द्वीप आवे यह द्वीप ३०० योजन लंबा चौड़ा है और जगती से ४०० योजन (आगे) जावे तो दूसरा द्वीप है और ऐसे ही जगती से ५०० योजन का लंबा तीसरा द्वीप है और ६०० योजन का चौथा द्वीप है और ७०० योजन का पांचवां द्वीप है और ८०० योजन का छठा द्वीप है। और जंबूद्वीप की जगती से ९०० योजन लवण समुद्र में सातवां द्वीप है। इस अपेक्षा से जगती से १८०० योजन तक मनुष्य का

वास कहा परन्तु ८४०० योजन का कहा वह द्वीपा द्वीप की परस्पर अपेक्षा से समझना । परन्तु लवण समुद्र में मनुष्य का वास १८०० योजन तक है कैसे कि-९०० योजन का सातवां द्वीपा और ९०० योजन जगती से लंबा है। सर्व मिलके १८०० योजन होता है।

प्रश्नोत्तर १७६

प्रश्न —लवण समुद्र में पाताल कलसा हैं वह लाख योजन का कहा है वो कौनसी जगह रहा है ?

उत्तर.—"श्री जीवाभिगमजी" सूत्र में कहा है कि-समभूमि पृथ्वी भाग में पानी के नीचे उसका मुख है और लाख योजन का पाताल कलसा पहिले पाथड़े में तथा आंतरा में रहा है। परन्तु समभूतल से ऊपर नहीं समझना। नरक में सामीपा भाग में रहा है (शाख: - "श्री जिवाभिगमजी" सूत्र की)

प्रश्नोत्तर १७७

प्रश्न:—श्री "जीवाभिगमजी" सूत्र में कहा है कि--लवण समुद्र का उदक माला सोलह हजार योजन ऊंचा कहा है इसमें ऐसा बताया है कि-जो प्रदेश, लिक्ष, जव, अंगुल, वेंत, कुक्षी धनुष, कोस, योजन यह ९५-९५ जावे जगती से तब ऊपर का विभाग पानी ऊंडा और सोलह विभाग पानी ऊंचा अर्थात् जगती से ९५ हजार योजन लवण समुद्र में जाय वहां सोलह हजार योजन पानी ऊंचा और ग्यारह हजार योजन पानी नीचा ऐसी गणना बताई है; तो प्रश्न होता है कि जगती से लवण समुद्र में बारह हजार योजन जावे जिधर बारह हजार योजन का लंबा चौड़ा गौतमद्वीप आता है वहां जम्बूद्वीप की तरफ ८८½ योजन और एक योजन का ९५ भाग मांहिला चालिस भाग पानी से ऊंचा जंबूद्वीप की तरफ दिखता है और लवण समुद्र की तरफ २ कोस आधा योजन पानी से ऊंचा दिखता है तो बारह हजार योजन की जल वृद्धि में ८८½ योजन का जल वृद्धिमान हुआ और प्रथम की गणना से दो हजार योजन की जल वृद्धि होती है और जो बारह हजार योजन के प्रमाण से दो हजार योजन के अनुमान जल वृद्धि होनी लवण समुद्र में बयालीस

हजार योजन जाय तब गोस्थुभ द्वीप आदि वेलधर अणु वेलंधर नाग राजा का पर्वत १७२१ योजन का उंचा कहा है तो उस हिसाब से जल वृद्धि पणा सात हजार योजन के अनुमान होना चाहिये तो पीछे वह द्वीप डूब जावे और देवता के क्रीडा करने का स्थान वगैरह भी डूब जावे और उस द्वीप के अधिकार में तो जल के अंदर हो ऐसा नहीं समझा जाता है। ऐसे ही चंद्र सूर्य का विमान भी समुद्र में तपा तपे है तपेंगे ऐसा पाठ " श्री जीवभिगम जी" सूत्र में है तो उसकी ऊंचाई से जल की ऊंचाई वृद्धि हो तो तपने संबंधी के पाठ के पाठ में भी बाधक लगे हैं ?

उत्तर —इस सर्व के समाधान के लिये ऊपर का कहा हुआ बारह हजार योजन का लंबा चौड़ा गौतम द्वीप की गणना प्रमाण में ६७ हजार योजन जगती से लवण समुद्र में जावे तब सातमें योजन की जल वृद्धि समझी जाती है और उस गणना से गोस्थुभ द्वीप तथा चंद्र, सूर्य का मंडल बाहिर रहते हैं। पीछे तत्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर १७८

प्रश्न:—असख्याता द्वीप समुद्र में चंद्र सूर्य की गणना किस प्रकार से समझनी ?

उत्तर:—धातकीखंड से आगला कालो पर धातकीखंड का १२ चंद्र सूर्य उसका तीन गुणा करना अर्थात् ३६ हुआ। उसमें पिछले ६ जंबूद्वीप का और लवण समुद्र का मिलाना अर्थात् सर्व मिलके ४२ चंद्रमा और ४२ सूर्य कालोदधी समुद्र का हुआ। ऐसे ही सर्व द्वीप समुद्र का चंद्र सूर्य को तीन गुणा करके पीछला मिलाना, इतनी सर्व की संख्या आवेगी। (शास्त्र:-श्री "जीवाभिगमजी" सूत्र की)

प्रश्नोत्तर १७९

प्रश्न— अढाईद्वीप के चंद्र, सूर्य का कैसा संठाण है ?

उत्तर— आधा कोठ का संठाण है (शास्त्र:-श्री "जीवाभिगमजी" सूत्र की तथा श्री "जंबूद्वीप पन्नति" सूत्र की)

प्रश्नोत्तर १८५

प्रश्न यम की जाति के देवता कहां पर रहते हैं ?

उत्तर- रत्नप्रभा पृथ्वी को हजार योजन का ऊपर पिंड है उसमें १०० योजन नीचे छोडिये और सौ योजन ऊपर है उसमें दश योजन ऊपर छोडिये और दश योजन नीचे छोडिये, बीच में ८० योजन की पोलार में रहते हैं।

प्रश्नोत्तर १८६

प्रश्न-श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के दूसरे पद में कहा है कि-बादर पृथ्वी काय लोक के असंख्याता भाग में है। अपर्याप्त सर्व लोक में कहा वह कैसे संभव है ?

उत्तर-सूक्ष्म जीव का बादर का आयु बन्धा हुआ और वह काल करके पृथ्वी में अपर्याप्त पना पाता है तथा समुद्घात आश्री सर्व लोक में अपर्याप्त कहा है।

प्रश्नोत्तर १८७

प्रश्न—पहिली नारक १७८००० योजन की पोलार कही वह कैसे ?

उत्तर-श्री " पन्नवणाजी " सूत्र में पोलार कही परन्तु ऐसा कहा है कि-पहिली नरक का पिंड १८०००० योजन का है उसमें एक हजार योजन ऊपर और एक हजार योजन नीचे छोडिये, बीच में १७८००० योजन में पाथडा तथा आंतरा में भवनपति देवता रहते हैं ऐसा कहा है। परन्तु सर्व पोलार है ऐसा नहीं कहा है। परन्तु पोथडा वालों ने कहा है उसमें ऐसा सम्भव है कि—बीच २ भाग में थोडी २ पोलार है उस अपेक्षा से कहा समझना। परन्तु पाठ में ऊपर कहे अनुसार है। साक्षः-श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के दूसरा पद की)

प्रश्नोत्तर १८८

प्रश्न—किसी वक्त अढाई द्वीप में २४ मुहूर्त का विरह पडे या कि नहीं ?

प्रश्नोत्तर १९०

प्रश्न—तिर्यंच जलचर को जल में अशनादिक संज्ञा से तथा ज्योतिषी का विमान देखने से जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न होवे तब निराणा करें (शास्त्र श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद ४ में) तब श्रावक का व्रत पाले तथा जल में रहा हुआ श्री सामायिक, पोषा कैसे करें ?

उत्तर—तिर्यंच जलचर को जल में रहना यह तो उनका जन्म समुद्र में है और योनि भी यह ही है। परन्तु सामायिक, पोषा में अपने शरीर के कारण बिना हिलाते नहीं और शरीर का [illegible] धर्म करे। दृष्टांत—किसी पुरुष ने गड्ढे में बैठा ही पचखाण किया करें, परन्तु [illegible] स्वभाव [illegible] है तो [illegible] फिरता आप ही रहा किन्तु आप एक आसन रूप रहा उस दृष्टांत से जल में मच्छ आदि का रहना यह तो योनि रूप है। परन्तु सामायिक पोषा के अवसर चपलपणा करे नहीं इत्यर्थ।

प्रश्नोत्तर १९१

प्रश्न--ज्ञान, दर्शन और चारित्र इन तीनों की पर्याय कैसे समझनी चाहिये ?

उत्तर- पर्याय का पलटने का स्वभाव है और वह वस्तु अरूपी है और पर्याय अर्थात् ऋद्धि अथवा शक्ति ज्ञान से एक वस्तु जाने और उसी वस्तु को फिर दूसरे रूप में जाने इस अपेक्षा से ज्ञान की पर्याय पलटी हुई समझना चाहिये। एक वस्तु को दर्शन कर के देखे उसको ही दूसरी वार दूसरे रूप में देखे उसके अपेक्षा से दर्शन की पर्याय पलटी हुई समझे। श्री सामायिक चारित्र वाला सूक्ष्म संपराय चारित्र पर चढे उसके पश्चात् श्री सामायिक चारित्र की पर्याय पलटी और सूक्ष्म संपराय की नई पर्याय में प्रवेश किया। इस अपेक्षा से चारित्र की पर्याय जानना (शास्त्र श्री "पन्नवणा जी" सूत्र के पदवें तथा श्री "भगवती जी" सूत्र की)

प्रश्नोत्तर १९२

प्रश्न—बादर पानी तथा बादर वनस्पति कहां तक है ?

उत्तर—श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के पद २ में कहा है कि-उर्ध्व लोक में १२२ में कल्प तक विमान के विषय विमान कल्पा के विषय विमान पाथड़ा के विषय अप तथा वनस्पति कही है।

प्रश्नोत्तर १९३

प्रश्न—जीव विग्रह गति से वर्तता मन रहित है तो उनको संज्ञी कैसे कहा है ?

उत्तर—जीव विग्रह गति वर्तता संज्ञी का आयु वेदता है इस कारण से संज्ञी कहा है।

प्रश्नोत्तर १९४

प्रश्न—नारकी में तथा देवता में संज्ञी का अपर्याप्ता और पर्याप्ता है और पहिली नरक में तथा भवनपति,

वाणव्यन्तर में जीव के तीन भेद कहा है उसका क्या कारण ?

उत्तर--असंज्ञी जीव मर के नरक में तथा भवनपति वाणव्यन्तरपणे उत्पन्न होता है। इससे असंज्ञी कहा है जहां तक अवधिज्ञान नहीं उपजे तथा अपर्याप्तापणा है वहां तक असंज्ञीपणा कहा है। परन्तु जीव का भेद तेरहवां है किन्तु अग्यारहवां नहीं (शास्त्र) श्री "पन्नवणाजी" सूत्र पद छट्ठा की ओर संज्ञी में मर के उपजे उसको संज्ञी कहा है

प्रश्नोत्तर १९५

प्रश्न--सचित्त अचित्त और मिश्र योनि किस को कहना ?

उत्तर --जो जीव के उत्पन्न होने का स्थान है वह सचित्त हो तथा वह जीव सचित्त का आहार लेवे उसको सचित्त योनि कहते हैं ऐसे ही अचित्त और मिश्र समझना।

प्रश्नोत्तर १९९

प्रश्न—विजय आदि चार विमान का देवता कितना भव करें ?

उत्तर—श्री " भगवती जी " सूत्र के श० ८ उ० ९ में कहा है कि-सर्व बंधका उत्कृष्ट असंख्याता सागर का तो उस अपेक्षा से विजयादि विमान का देवता संख्याता भव करें तथा श्री " उत्तराध्ययन जी " सूत्र के ३६ वां का गाथा २२ में विजयादि विमान के देवता का आंतरा संख्याता सागर का पड़ता है। उस अपेक्षा से तथा विजयादिक विमान के विषय गये हुए जीव संख्याती इन्द्रिय करें तो कितनेक संख्यात भव करने को कहते हैं। कोई ७-८ भव करने का कहते है। कोई तीन भव करने को कहते है। परन्तु ज्यादा से ७-८ भव करने का संभव है। पीछे तत्वार्थ केवली गम्य। (शास्त्र: श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के पद १५ वें इन्द्रिय पद में कहा है)

प्रश्नोत्तर २००

प्रश्न—सर्वार्थ सिद्ध विमान का देवता कितना भव करें ?

प्रश्नोतर २०४

प्रश्न- निगोद का जीव काल से काल कितना रहे ?

उत्तर- जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट अनंतकाल यह अनंती उसरपणी अनंती अवसरपणी काल से काय स्थिति रहे और क्षेत्र से अढाई पुदगल प्रवर्तन लगे रहें (शास्त्र: श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद १८ में काय स्थिति पद में कहा है)

प्रश्नोत्तर २०५

प्रश्न—अवधिज्ञान की स्थिति कितनी है ?

उत्तर—जघन्य एक समय को उत्कृष्टि ६६ सागर झाझेरी कही (शास्त्र:-श्री "पन्नवणाजी" सूत्र के पद १८)

प्रश्नोत्तर २०६

प्रश्न--ज्ञानी का ज्ञान तथा सम्यक्त्व कितने काल तक रहे ?

उत्तर—जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्टि ६६ सागर रहते हैं पीछे अवश्य सम्यक्त्व को तथा ज्ञान को छोडे यह क्षयोपशम सम्यक्त्वका पहचाई आश्रो जानना (शास्त्रः श्री " जीवाभिगम जी " सूत्र के तथा श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद १८)

प्रश्नोत्तर २०७

प्रश्न —द्रव्य प्राण किस को कहना और भाव प्राण किस को कहना ?

उत्तर--पांच इन्द्रिय, तीन बल, श्वासोश्वास और आयु यह १० द्रव्य प्राण कहा है। ज्ञान और प्रणाम को भाव प्राण कहा है (शास्त्रः श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद १८ में उक्ति में कहा है)

प्रश्नोत्तर २०८

प्रश्न---मन योग की स्थिति कितनी ?

उत्तर---जघन्य एक समय की उत्कृष्टि ८ समय की स्थिति है श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद १८ में से। अन्तर मुहूर्त कहीं पर २ समय से २ घड़ी तक अन्तर मुहूर्त समझना। परन्तु यहां छोटा अन्तर मुहूर्त समझना।

प्रश्नोत्तर २०९

प्रश्न---बादर निगोद की काय स्थिति कितनी ?

उत्तर---७० क्रोडा क्रोड सागर की (शास्त्र: श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद १८ वें से)

प्रश्नोत्तर २१०

प्रश्न---मिथ्यात्व का पट पडदाई किस को समझना ?

प्रश्नोत्तर २२१

प्रश्न—भवनपति का देवता क्षेत्र प्रमाण अवधिज्ञान से कितना देखे ?

उत्तर—जघन्य २५ योजन उत्कृष्ट असंख्याता द्वीप समुद्र जाने (शास्त्र–श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के पद [illegible] में)

प्रश्नोत्तर २२२

प्रश्न—असुर कुमार छोड़ के नवनीकाय का देवता तथा वाणव्यंतर देवता अवधिज्ञान से कितना देखे ?

उत्तर—जघन्य २५ योजन और उत्कृष्ट संख्याता द्वीप समुद्र देखे. पल्योपम का आयु इस कारण से (शास्त्र–श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के पद ३३ में)

प्रश्नोत्तर २२५

प्रश्न—पहिला देवलोक में अपरिग्रहित देवी का विमान कितना है ?

उत्तर—६ लाख है वह देवीयों के ऊपर मालिक नहीं है। स्वइच्छाचारी है ३-५-७-९—११ वां देवलोक के देवता के भोग में आती है।

प्रश्नोत्तर २२६

प्रश्न—दूसरे देवलोक में अपरिग्रहित देवी का विमान कितना है ?

उत्तर—४ लाख है यह भी ऊपर अनुसारहै परंतु विशेषता यह हैकि-४-६-८-१०-१२वातना देवलोक का देवता का भोग में आती है

प्रश्नोत्तर २२७

प्रश्न—देवांगना कहां तक ऊंची जाती है और किस रीति से भोग भोगती है ?

[illegible] भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषी पहिला दूसरा देवलोक का देवता काया से मनुष्य की तरह भोग [illegible] मनुष्य की स्त्री के साथ भोग करने से वीर्य खरे अर्थात् काम से निवृत्ति पावे और देवता का वीर्य [illegible] न हो और उसका वीर्य देवी के ५ इन्द्रिय पणे प्रणमे (शास्त्रः-श्री ' पन्नवणा जी सूत्र [illegible] चौथा देवलोक का देवता मुंह, हाथ, नख, स्तन आदि का स्पर्श भोग करके सुख" पावे पांचवा छट्ठा देवलोक का देवता देवांगना का रूप देख कर संभोग सुख पावे ७-८ देवलोक का देवता देवी का गीत हास्य [illegible] संभोग सुख पावे और ९-१०-११-१२ यह चार देवलोक का देवता अपना स्थानक पर रहा [illegible] मन में चिन्तना करें तिवारे वह देवी भी अपने स्थानक पर बैठी हुई भली बुरी काम चेष्टा मन में [illegible] भोग [illegible] सावधान हो तब वह देवता वहां ही रहा हुआ मन संकल्प कर जलदी सुख पावे नव-ग्रैवेयक तथा [illegible] अनुत्तर विमान का वासी देवताओं को उपशांत विषय विकार होता है। इससे वह किसी रीति से दोषणों को नहीं भोगते हैं तथापि उनको दूसरे देवताओं से सुख अनंत गुणा है। सुधर्म, ईशान देवलोक की

॥१८५॥ देवीयों को कौन से देवलोकवालों के कितने आयुवाले भोग में आवे उन देवताओं को भोग की इच्छा कैसे पूर्ण हो उसका यंत्र लिखते हैं।

पहिले देवलोक की अपरिग्रहित देवी कौन २ से देवलोक तक काम आती है।

उसका यंत्र नीचे अनुसार

देवी की स्थिति	भोग कौन सी इन्द्रिय से	देवलोक का देवता
[illegible] पल्य की	काया	१
[illegible] से १ समय अधिक १० पल्य तक	स्पर्श	३
[illegible] समय अधिक से २० पल्य तक	शब्द	५
२० [illegible] समय अधिक से ३० पल्य तक	रूप	७

उत्तर-भासन फंरता है अर्थात् अङ्ग फरकने से जानती है कि—मुझे ऊपर का देवता याद करते हैं जब आप उधर वैक्रिय शरीर बना करें तयार हो तब ऊपर का देवता यहां बैठा हुआ ही खींच लेते हैं।

अत्रशंका:-यहां बैठे कैसे देवी को खींच लेवे तथा दूर रहे वीर्य का पुद्गल देवी कैसे) ग्रहण करें ?

समाधान-जैसे नागर बेल की बेल पर्वत में उत्पन्न होती है और वहां उनका मालिक सवेरे पान तोड़ कर छावड़ा में भर के परदेश हजार कोस ऊपर भेजे अब वह छावड़ा हजार कोस आया तदापि पान तो हरा बना रहता है और उस में एक भी खंडित नहीं होता है तो वह शक्ति बेल की है क्योंकि बेल का पुद्गलों यहां आता है और पान में मशोषाय होता है। इससे पान हरा रहता है। परन्तु सत्ता बेल की है। ऐसे ही ऊपर का चार देवलोक का देवता का वीर्य का पुद्गल यहां ही बैठी हुई देवी बेल के पान के न्याय से ग्रहण करती हैं कि पान के अनुसार समझे वह पान बेल से दूर हजार कोस आया है उस वक्त उस बेल को मूल में से कोई मनुष्य निकाल

दे सो उस बेल का प्रभाव से आया हुआ छावडे में एक भी पान अच्छा हरा नहीं निकले और टुकडा टुकडा हो जाय । यह गुण किस का है ? उस बेल का है । हमारे कोस से ऊपर बेल की शक्ति से पान पहुंच गया इस न्याय से देवी को ऊपर का देवता खेंच लेते हैं । इस से बेल का न्याय बराबर समझना चाहिये ।

प्रश्नोत्तर २२९

प्रश्न मनुष्य पंचेन्द्रिय के शरीर में चौदह स्थानक में समूर्छिम जीव उत्पन्न होता है । सो तिर्यंच पंचेन्द्रिय के शरीर में कैसे नहीं उपजे ?

उत्तर–तिर्यंच के मल मूत्रादिक में तिर्यंच समूर्छिम जीव उत्पन्न होता है । ऐसा श्री " पन्नवणा जी " सूत्र पंदरह में कहा है । परन्तु उस स्थान में मनुष्य समूर्छिम न उत्पन्न हो ।

प्रश्नोत्तर २३१

प्रश्न --प्रदेश और परमाणु यह दो निर्विभाग रूप हैं तो दोनों में विशेषता क्या समझी जावे ?

उत्तर --जो स्कंध प्रतिबन्ध निर्विभाग का चरमांत वह प्रदेश और एकाकी विकलीत स्कंध परिणाम रहित एमा जो लोक के विषे अलग २ वर्तते हैं वह परमाणु जानना (शाख:—श्री " पन्नवणाजी " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २३२

प्रश्न श्री केवली महाराज समुद्घात करते हैं वह करने से होती है कि-स्वभाव से ?

उत्तर—स्वभाव से ही होती है कारण कि-करें तो असंख्याता समय निकल जावे और यह तो आठ समय में बन्ध हो जाता है। तेरहवां गुणस्थान में वेदनीय कर्म की उदीरणा नहीं तो उदीरणा किये बिना कैसे करें ! इस लिये न्याय देखना था केवली समुद्घात स्वभाव से ही होती है (शाख:—श्री " पन्नवणाजी " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २३३

प्रश्न—निगोद का जीव एक श्वासोश्वास में उत्कृष्ट १७॥) भव करते हैं सो एक श्वासोश्वास में कितना काल जाय ?

उत्तर—असंख्याता समय का आवलि और संख्याता समय का उश्वास समझना और २४८० आवलिका में एक श्वास, उश्वास समझना। और इतनी आवलिका में १७॥) भव निगोद का जीव करते हैं (साख—श्री " पन्नवणाजी " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २३४

प्रश्न—क्षुल्लक भव किसको कहना चाहिये ?

उत्तर—२५६ आवलिका को निश्चयसें जीव की क्षुल्लक भव श्री जिनराज देव ने कहा है (श्री " पन्नवणा जी " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २३३

प्रश्न—निगोद का जीव एक श्वासो श्वास में उत्कृष्ट १७॥) भव करते हैं तो एक श्वासोश्वास में कितना काल जावे ?

उत्तर—असंख्याता समय का श्वास और संख्याता समय का उश्वास समझना और २४८० आवलिका में एक श्वास, उश्वास समझना। और इतनी आवलिका में १७॥) भव निगोद का जीव करते हैं (साख:—श्री " पन्नवणाजी " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २३४

प्रश्न—क्षुल्लक भव किसको कहना चाहिये ?

उत्तर—२५६ आवलिका की स्थितिवाले जीव की क्षुल्लक भव श्री जिनराज देव ने कहा है (श्री " पन्नवणाजी " सूत्र की)

उत्तर—शेष में ६ मास आयु बाकी रहे तब केवल उत्पन्न हुआ हो वह केवली उस वक्त सत्ता कर्म को करने के लिये केवल समुद्‌घात करते हैं। परन्तु बहुत स्थितिवाला नहीं करे ऐसा श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद ३६ वां की टीका में कहा है। पीछे तत्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर २३९

प्रश्न—श्री " जंबुद्वीप पन्नति " सूत्र में कहा है कि—जघन्य दो तीर्थंकर का जन्म महोत्सव हो और उत्कृष्ट चार श्री तीर्थंकर का जन्म महोत्सव हो ऐसा कहा यह कैसे समझे ?

उत्तर—श्री "जंबुद्वीप पन्नति" सूत्रमें जघन्य दो तीर्थंकर का जन्म महोत्सव हो वह एक भरत क्षेत्र में और एक ईरवर्त क्षेत्र में समझे और चार का जन्म हो तो श्री महाविदेह क्षेत्र आश्री मानना।

अपशंका—कोई ऐसा कहे कि—एक भरतक्षेत्र में और एक ईरवर्त क्षेत्र में और ५ महाविदेह क्षेत्र में ऐसे

चार तीर्थंकर का जन्म महोत्सव हो कि नहीं ?

उत्तर — इस प्रमाणसे न हो कारण कि-भरत ऐरवर्त में जन्म हो तब महाविदेह क्षेत्र में दिन हो और महाविदेह क्षेत्र में जन्म हो तब भरत ऐरवर्त क्षेत्र में दिन हो इससे यह प्रमाण से जन्म न हो ऐसे कि-तीर्थंकर का जन्म रात्रि के समय हो परन्तु दिन में नहीं हो इस लिये दो का जन्म महोत्सव भरत ऐरवर्त क्षेत्र में जानना और चार का महाविदेह क्षेत्र में जानना। (शास्त्र-श्री " जंबुद्वीप पन्नति " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २८०

प्रश्न-कई एक लोक ऐसा कहते हैं कि-श्री तीर्थंकर महाराज के जन्म समय "हरण गवेषी" देवता श्री इन्द्र महाराज के हुकम से सुघोषा घंटा बजा के पीछे सर्व विमानों में आप फिरके खबर देता है ऐसे प्ररूपणा करते हैं वह कैसे ?

उत्तर श्री " जंबुद्वीप पन्नति " में कहा है कि-सुघोषा घंटा बजा के पीछे सर्व विमानों में जाके खबर नहीं दे।

परन्तु उसी— में ढूंढ रत्न के वहां २ देश २ के विषय जोर चन्द करके महोत्सवादिक सर्व कार्य की घंटे में कहते हैं (वाग की तरह) अर्थात् सर्व देवता अपने २ घंटा मार्फत शब्द सांभल के हर्षयुक्त होके महोत्सवादिक कार्य करने को आते हैं। परन्तु "हरण गवेषी" देवता विमानों में फिर के खबर दें ऐसा नहीं समझे। पीछे तत्वार्थ केवली गम्य (शास्त्र:-श्री " जंबुद्वीप " पन्नति " सूत्र में जन्म अधिकार में)

प्रश्नोत्तर २८१

प्रश्न—देवता, तीर्थंकर महाराज के उत्सव पर आवे तब मूल रूप से आवे किंवा वैक्रेय रूप बनाके आवे?

उत्तर—मूल रूप से आवे। परन्तु वैक्रेय रूप तथा उत्तर वैक्रेय रूप अर्थात् प्रधान वैक्रेय बना के आवे परन्तु तीर्थंकर महाराज के वक्त जितना देह प्रमाण हो उतना देह प्रमाण बना के आवे कारण कि—नारद ऋषी जी महाविदेह क्षेत्र में गये तब वहाँ के मनुष्यों को आश्चर्य लगा कारण कि—वहाँ के मनुष्य का देह प्रमाण ५०० धनुष का है और नारद ऋषी जी का देह प्रमाण दश धनुष का है। इससे आश्चर्य

प्रश्न—वैक्रेय रूप में से वैक्रेय रूप करे तब कितने पद ना करते हैं कि—वैक्रेय रूप में से वैक्रेय रूप नहीं।

उत्तर—अढ़ाई द्वीप में समकाल में जघन्य २० श्री तीर्थंकर महाराज का उत्सव होता है तो श्री शक्र महाराज आदि ६४ इन्द्र अपनी २ हद प्रमाण से जम्बुद्वीप में मूल रूप से आवे और बाकी सर्व ठिकाने वैक्रय रूप बना के भेजे, और यह इन्द्र तीर्थंकर महाराज की माता पास से लेके मेरुपर्वत जाता हुआ बीच में पांचरूप करे तो वैक्रेय रूप में से वैक्रेय रूप हुआ फिर मेरुपर्वत ऊपर जन्म महोत्सव करना फटक रत्नमय चार बलद वैक्रेय वे है। इसलिये वैक्रय रूप में से वैक्रेय रूप होता है इसमें शंका नहीं (साख—श्री "जम्बुद्वीप पन्नत्ति" सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २४३

प्रश्न—देवता समवसरण में कितना बड़ा रूप बना के आवे और भवधारणी शरीर से आवे कि नहीं ?

उत्तर—देवता भव धारणी शरीर से नहीं आवे और जब समवसरण में आना हो तब जिस तीर्थंकर महाराज का समय हो उस समय मनुष्यों के शरीर जितना है, इतना विक्रेय करके समवसरण में तथा तीर्थंकर के,

महाराज के जन्म समय में तथा जिस २ कार्य के लिये आया हो तब इस प्रमाण से आवे और इससे विपरीत रीति से आवे तब आश्चर्य कहा जाता है।

प्रश्नोत्तर २४४

प्रश्न—कौन से देवताओं का आना जाना होता है ?

उत्तर—भवनपति से बारहवां देवलोक तक के देवताओं का आना जाना होता है वहां तक ही नौकर चाकरपणा है। ऊपर के देवताओं का आना जाना नहीं है और नौकर चाकरपणा उनको नहीं है। सर्व अहम इन्द्र हैं (शाख:-श्री " जम्बुद्वीप पन्नति " सूत्र के ६४ इन्द्र आये उसकी)

प्रश्नोत्तर २४५

प्रश्न—पालक विमान एक लाख योजन का है और अरुणोदय समुद्र में एक लाख योजन का दादरा है तो उसमें कैसे बाहिर निकले ?

सेवनीय है तो उस ऊपर से वनिता का टिकानः शाश्वत् समझा जाता है।

प्रश्नोत्तर २५२

प्रश्न—श्री " जंबुद्वीप पन्नति " सूत्र में कहा है कि चक्रवर्ती का स्कंधावर बारह योजन लंबा और ९ योजन चौडा इतनी जमीन में पडाव करते हैं तो चक्रवर्ती का लश्कर ८४ लाख हाथी, ८४ लाख घोडा, ८४ लाख रथ, ९६ क्रोड पैदल इतना बडा लश्कर इतनी जमीन में कैसे समाय ?

उत्तर—श्री " जंबुद्वीप पन्नति " सूत्र में जो कहा है वह सत्य हैं उसका हिसाब चार कोष का योजन है तो १२×४=४८ कोष लंबी जमीन हुई और ९×४=३६ कोष चौडी जमीन हुई ऐसा एक २ कोष का खांडवा कितना हो या ४८×३६=१७२८ कोष का खांडवा हुआ ऐसा एक २ कोष का धनुष २ हजार धनुष का एक गाऊ लंबा चौडा है २०००×२०००=४०००००० धनुष हुआ। एक घोडा को उत्कृष्ट से उत्कृष्ट चार धनुष जगह चाहिये तो

एक गाऊ का खांदये में दश लाख घोडा समाय तो ८४ लाख घोडा ९ कोष के ९ खांदवे में समाय । इस से तीन गुणी जगह रथ के लिये चाहिये सो २७ कोष के २७ खांदवा और हाथी के लिये रथ से दूनी जगह सो ५४ कोष का ५४ खांदवा हाथी के लिए, ऐसे सर्व मिल के कुल ९० खांदवा रथ घोडा हाथी के लिये समजना तो बाकी [illegible] २५१८ खांदवा कोष २ का रहा सो उस जमीन में ९६ क्रोड पैदल यह गणीत प्रमाण से खुशी से समाय । ऐसा हो द्वारिका नगरी में रहती उसी गणित के न्याय से समाती हैं । इससे शास्त्र विरुद्धसमझे नहीं ।

प्रश्नोत्तर २५३

प्रश्न—श्री " जंबुद्वीप पन्नति " सूत्र में चक्रवर्ती का बाण ७२ योजन तक ऊंचा जावे ऐसा कहा है तो चुल्लहिमवंत पर्वत के सौ योजन ऊंचा है वहां उनका बाण कैसे पहुंच गया ?

उत्तर—चुल्लहिमवंत देवता का स्थान पर्वत ऊपर है वहां बाण डालता चक्रवर्ती, चुल्लहिमवंत पर्वत पास आकर प्रथम ग्यारह योजन की काया बनाता है ।

नदीयां नीची हैं तो उसका कैसा ?

उत्तर—पानी का नीचे बहने का स्वभाव है। परन्तु न्याय दृष्टि से देखने से ऐसा संभव है कि—जितने ऊंचे से पानी गिरे उतना ही उत्कृष्ट पानी किसी वक्त ऊंचा चढे गंगा प्रपात कुंड तथा सिंधु प्रपात कुण्ड यह दोनों निषध के नीचे सम भूतल हैं वहां विजय ऊन्ची नहीं है पीछे प्रदेश २ उतरती हैं इस कारण से शीतोदा नदी का मिलनी है इसका दाखला यह है कि—जो नल है उसका स्वभाव है कि जितना पानी पहिले ऊंचा चढाया जाय उतना पानी नीचे उतर कर ऊन्चे मजले में चढता है। इस न्याय देखने से उसी प्रमाण से पानी ऊन्चा चढ कर शीतोदा नदी में नदी का मिलना संभव है। पीछे तत्वार्थ केवलीगम्य।

प्रश्नोत्तर २५५

प्रश्न श्री " जम्बुद्वीप पन्नति " सूत्र में कहा है कि—शीतोदा नदी का पानी लवण समुद्र में ४२००० योजन चल कर और पीछे २ लवण समुद्र में मिला, ऐसा कहा तो लवण समुद्र के किनारे पृथ्वी के पास शीता

दसहजार योजन का मेरु पर्वत मूल में चड़ा है और उससे दोनों तर्फ ११२१ योजन दूर रहते हैं। ऐसे ही सब मिलकर १२२४२ योजन की उत्कृष्ट व्याघात समझनी (साख: श्री " जंबूद्वीप पन्नति " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २५९

प्रश्न श्री " उत्तराध्ययन जी " सूत्र के अ० २६ में कहा है कि–६ तिथि घंटे और श्री " ठाणांग जी " सूत्र के छट्ठे स्थान में कहा है कि–६ घटे और ६ तिथि घंटे वह कैसे ?

उत्तर–श्री " चंद्र पन्नति " सूत्र में कहा है कि–ऋतु संवत्सर से आदित्य संवत्सर की ६ तिथि बढ़ती हैं और ऋतु की अपेक्षा से चंद्र संवत्सर की ६ तिथि उसकी अपेक्षा से श्री " ठाणांगजी " सूत्र में ६ तिथि बढ़ने की तथा ६ तिथि घटने की कही है। परन्तु किसी पक्ष १ तिथि २ पक्ष न आवे जैसे २ महीनावत् ।

अधशंका–कोई कहे कि दो महीना की तिथि न हो तब ६ दिन बढ़ावा अवश्य कोई तिथि दो पक्ष

प्रश्नोत्तर २६५

प्रश्न —श्री "दश वैकालिक" सूत्र के अध्ययन तीसरे में कहा है कि– साधु साध्वी जी महाराज औषधि करावें तो अनाचरण दोष लगे तो साधु जी महाराज दवा कैसे करावें ?

उत्तर — श्री "निशीथ" सूत्र में कहा है कि–आराम होते हुये दवा करावें तो अनाचरण दोष लगे। परन्तु दर्द होने पर करावें तो दोष लगे नहीं।

प्रश्नोत्तर २६६

प्रश्न —[illegible] के भांगे कितने और कौन २ से ?

उत्तर —[illegible] भांगे कहे हैं (१) पृथ्वी (२) पानी (३) अग्नि (४) वायु (५) वनस्पति (६) दो इन्द्रिय

प्रश्नोत्तर २६९

प्रश्न—चौथे महाव्रत के भांगे कितने और कौन २ से ?

उत्तर—२७ भांगे कहते हैं (१) देवता संबंधी (२) मनुष्य सम्बन्धी (३) तीर्यंच सम्बन्धी मैथुन सेवना नहीं, सेवाना नहीं सेवता प्रति अनुमोदना नहीं, मन करके वचन करके काया करके ऐसे ही २७ भांगे चौथे महाव्रत के जानना (साक्षः—श्री " दश वैकालिक " सूत्र के अ० ४)

प्रश्नोत्तर २७०

प्रश्न—पांचवे महाव्रत के भांगे कितने और कौन २ से ?

उत्तर—५४ भांगे कहते है (१) अल्प इस से थोडा (२) बहुधा इससे ज्यादा (३) अणवा इससे बारीक (४) स्थूलवा इससे मोटा (५) चितमंतवा-इससे सचित (६) अचितमंतवा इससे अचित यह ६ प्रकार का

परिग्रह रखना नहीं, रखाना नहीं, रखते प्रति अनुमोदना नहीं, मन करके वचन करके काया करके ५४ भांगे ऐसे पांचवे महाव्रत के जानना (शास्त्र-श्री " दश वैकालिक " सूत्र के अ० ४)

प्रश्नोत्तर २७१

प्रश्न--छट्टे व्रत के भांगे कितने और कौन २ से ?

उत्तर-३६ भांगे कहते हैं (१)असणंवा (२) पाणंवा (३) खाइमंवा (४) साइमंवा इन चार बोलों आहार में से एक आहार का रात्रि भोजन करना नहीं, कराना नहीं, रात्रि भोजन करते प्रति अनुमोदना नहीं मन करके वचन करके काया करके ऐसे ३६ भांगे छट्टे महाव्रत के जानना (शास्त्र-श्री " दश वैकालिक " सूत्र के अ० ४)

प्रश्नोत्तर २७२

प्रश्न-साधु जी महाराज को रात्रि भोजन करें तो कितने महाव्रत भंग होवें ?

उत्तर—९ भांगे कहते हैं (१) क्रोध (२) मान (३) माया (४) लोभ (५) हास्य (६) भय (७) आचालपणा (८) विकथा (९) अणउपयोग यह ९ दोष वर्जना ऐसे ही ९ भांगे दूसरी समिति के जानने ।

प्रश्नोत्तर २७५

प्रश्न—तीसरी समिति के भांगे कितने और कौन २ से ?

उत्तर—७ भांगे कहते हैं (१) गवेषणा के ३२ दोष वर्जना यह—भिक्षा मांगना, ग्रहणषणा के दश दोष वर्जना, यह दूसरा भांगा परिभोग एषणा के ५ भांगे यह ५ मांडलीया का दोष वर्जना ऐसे ७ भांगे तीसरी समिति के जानने ।

प्रश्नोत्तर २७६

प्रश्न—चौथी समिति के भांगे कितने और कौन २ से ?

उत्तर—२ भांगे कहते हैं (१) "औधिक अर्थात पाटी शरी" वगैरह लेनी यह (२) उपग्राहिक अर्थात आगारी

समा कर. इस दा दाया का बच कर यह बजरत बला हे सेना मेलना ऐसे २ भांगे चौथी समिति का जानना।

प्रश्नोत्तर २७७

प्रश्न -चोथी समिति के भांगे कितने और कौन २ से ?

उत्तर -१०२४ भांगे कर सकते हैं।

१०–९ ८ ७–६–५–४–३–२–१
१०–४५–१२०–२१०–२५२–२१०–१२०–४५–१०–१
१–२–३–४–५–६–७–८–९–१०

गुणाकार करना
१०२४ भांगा सर्व
भांगाकार करना

" अनापात असंलोक " इस तरह कोई आता जाता न देखे वहां परठे (२) " पराणु घाती " इससे अपने जीव की दया पर जीव की व्याघात हो वहां न परठे (३) " सम " इस तरह ऊंची नीची भूमि के ऊपर न

... भूमि के ऊपर न परठे (५) " अचीर काल कृत " इससे थोडा काल की भूमिका होवे वहां न परठे (६) "दूरमोगाढ़े" इस तरह जघन्य चार अंगुल ऊंडी भूमिका वहां न परठे (७) 'वच्छीणे' इस तरह एक हाथ लम्बी चौडी अचित्त भूमि के ऊपर परठना (८) "नासन्ने"इस तरह स्थानक के समीप न परठना (९) " बीलवज्जीय " इससे ऊंदरादिक का बिल हो वहां न परठना (१०) "तसपाणबीयरहियं" इससे जहां हरितकाय अंकुर बीज त्रस जीव न हो परठना। यह दश और एक संयोगी का दश हुआ दूसरे संयोगी का ४५ हुआ, तीसरे संयोगी का १२० हुआ, चौथे संयोगी का २१० हुआ, पांचवें संयोगी का २५२ हुआ, छट्टे संयोगी का २१० हुआ, सातवें संयोगी का १२० हुआ, आठवें संयोगी का ४५ हुआ, नवमें संयोगी का १० हुआ, और दशवें संयोगी का १ भांगा हुआ। इसी तरह सब मिल कर १०२३ भांगे हुए और १ भांगे शुद्ध यह ऊपर का दोष वर्ज करके परठना इस तरह सब मिलाकर १०२४ भांगे पांचवी समिति के जानना।

प्रश्नोत्तर २७८

प्रश्न—साधु जी महाराज के अतिचार कितने और कौन २ है?

भी चार अर्थात् १२८ भी करते हैं ज्ञान के चौदह, दर्शन के पांच, पंच महाव्रत के पचीस

... समिति के चार, दूसरी भाषा समिति के चार, तीसरी समिति के ४९ वें करते हैं ब्यालीस दोष आहार पानी ४, ५ मांडलिया के, एक रात्रि का लिया दिन को भोगवे, एक दिन का लिया रात्रि को भोगवे इस प्रकार ४९ हुए, चौथी समिति के चार, पांचवी समिति के ६८ अतिचार और मन गुप्ति, वचन गुप्ति, काय गुप्ति उसम एक २ के चार २ भांगा किये ऐसे हो १२ सब मिल कर १२१ हुआ और तीसरी समिति के द्रव्य से आदि चार बोल बढ़ाने से १२८ अतिचार जानना।

प्रश्नोत्तर २७९

प्रश्न-साधु साध्वीजी महाराज को तीसरे-प्रहर गोचरी करनी कही है। तो इस समय उस काल के बिना गोचरी करते हैं सो कैसे ?

उत्तर-उस स्थान से गोचरी करनी यह तो उत्कृष्ट करणी वालों को है परन्तु श्री " ...

से कहा है "काले कालं समायरे" अर्थात् जिस ग्राम में जिस वक्त गोचरी का समय होवे तब करनी और उस प्रमाण से [illegible] ना मिळाकरना पावे, न मिलने से तथा निशीथ सूत्र के उ० १० में कहा है कि—मुनि के सूर्य उदय से सूर्य अस्त होय तब तक आहार की वृत्ति है पहिले प्रहर का आहार चौथे प्रहर ग्रहण करे तो प्रायश्चित्त आवे [illegible] है तो इस न्याय से मुनिराज को संयम के लिये क्षुधा वेदनीय बुझाने के लिये चौथे प्रहर में गोचरी करना बाधक नहीं है।

प्रश्नोत्तर २८०

प्रश्न—श्री "दश वैकालिक" सूत्र के अ० ७ वें में मुनि को दो प्रकार की भाषा बोलनी कही और श्री "पन्नवणाजी" सूत्र के पद ११ वें में चार प्रकार की भाषा बोलता मुनि आराधिक होवे इस रीति कहा सो कैसे ?

उत्तर—श्री "पन्नवणाजी" सूत्र में जो भाषा कही वह उपदेश तथा चर्चा अवसर पर मुनि चार प्रकार की भाषा [illegible] उदाहरण श्री "सूयगडांग" जी सूत्र के श्रुतस्कंध दूसरे अध्ययन पहिले में कहा है कि चार दिशा से आये [illegible] पुरुष की प्ररूपणा मुनि व्याख्यान द्वारा प्ररूपण करे वह भाषा झूठी तथा मिश्र होने से चार भाषा बोलता मुनि का आराधिक पणा कहा है।

२८१

प्रश्न—श्री " उत्तराध्ययन जी " सूत्र के [illegible] वें में भी इसकेवी मुनि की पूजा करते हैं इस संबन्ध में मुनि को दोष लगे है या कि नहीं ?

उत्तर—यह रूप भक्ति करने के भाव में व्यावच्च करते हैं । वह व्यावच्च कोई मुनि के शरीर संबन्धी नहीं करते हैं अर्थात् स्पर्श कर दिखाने रूप व्यावच्च नहीं करते हैं । परन्तु मुनि के बीभत्स अविष्ट रूप देख कर कोई अनार्य या मुनि की दुर्गंछा करते तिरस्कार रूप भक्ति व्यावच्च करते हैं । इसमें भी मुनि मन, वचन काया से आज्ञा नहीं है इससे मुनि को कोई भी दोष नहीं है ।

प्रश्नोत्तर २८२

प्रश्न—ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ने पूर्व के पांच भव देखे इससे कई एक ऐसा करते हैं कि जातिस्मरण से देखा तो उसको सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई कैसे उसका क्या संभव है ?

उत्तर—श्री " उत्तराध्ययन जी " सूत्र के अ० १३ वें में जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हुआ ऐसा पाठ बिल्कुल नहीं है ।

उपदेश विलाप रूप हुआ है तो उस न्याय देखते भी सम्यकत्व समझे नहीं वैसे ही जो अवीतता में मरु के सातवीं नरक में गया। पीछे तत्वार्थ केवलीगम्य।

प्रश्नोत्तर २८३

प्रश्न- मृगापुत्र किस के समय में हुआ है ?

उत्तर पहिले तीर्थंकर के शासन में हुआ है (शास्त्रः श्री " उत्तराध्ययन जी" सूत्र के अ० १९ में) पांच महाव्रत स्थापना उस अपेक्षा से जानना और दीक्षा भी ग्रीष्म ऋतु में थी " जहाइमइय सीयं " पाठ है।

प्रश्नोत्तर २८४

प्रश्न- श्रावक को सिद्धांत पढ़नो तथा वांचना वाधक नहीं है ऐसी कि श्री " [illegible]

भी है इससे उपरान्त श्रावकजी को सूत्र बांचना पढ़ना बाधक नहीं सूत्रों में श्रावकों की प्रशंसा भी कही है। पीछे सत्यार्थ केवलीगम्य।

प्रश्नोत्तर २८५

प्रश्न—क्षायक सम्यक्त्व वाला जीव युगल पणा पावे कि नहीं ?

उत्तर – युगलपणा न पावें कारण कि युगलपणा पावे तो चार भव हो जावे सो यह बात न मिले कारण कि श्री " उत्तराध्ययन जी " सूत्र के अ० २९ में कहा है कि "तच्चं पुण भवग्गहणं नाइ कमइ" इति वचनात् ऐसा कहा है कि क्षायक सम्यक्त्व वाला तीन भव उलंघे नहीं युगलपणा पावे तो चार भव हो जावे, इससे युगलपणा न पावे।

प्रश्नोत्तर २८६

प्रश्न—क्षायक सम्यक्त्व वाला कितना भव करें ?

उत्तर—तीन भव करे वह कहते हैं (१) नारकी का (२) देवता का (३) मनुष्य का पीछा अवश्य मोक्ष जावे (श्री "उत्तराध्ययनजी" सूत्र के अ० २९) पीछे तत्वार्थ केवली गम्य ।

प्रश्नोत्तर २८७

प्रश्न—श्री "उत्तराध्ययनजी" सूत्र के अ० ३४ में तथा श्री "पन्नवणा जी" के सूत्र पद १७ में कहा है कि ...का स्थान असंख्याता और लेश्याका प्रणाम जघन्य ३-९-२७-८१-२४३ यावत् बहुत कहनेका क्या परमार्थ ?

उत्तर—बहुत कहने का परमार्थ ऐसे हैं कि लेश्या के परिणाम के तीन २ गुणा आठ वक्त करने से ६५६१

होता है इतना परिणाम का स्थान कहा है ।

प्रश्न ——भाठ वक्त करने का क्या कारण है ?

उत्तर —जीव पर भव का आयु आठ अपकर्ष से बांधता है इसलिये इतना परिणाम का स्थान है कारण कि परिणाम बिना परभव का आयु जीव बन्धता नहीं है । इसलिये और लेश्या का स्थान असंख्याता कहा जीव आश्री स्थान समझना ।

प्रश्न — जीव अनंता है तो असंख्याता स्थान कैसे संभव है ?

उत्तर —निगोदका जितना शरीर असंख्याता है उतना लेश्याका स्थान समझना एक शरीर में अनंता जीव है परन्तु सर्व जीवों का लेश्या स्थान एक ही समझना चाहिये यह आश्री असंख्याता स्थान लेश्या का समझना विशेष उदारीक प्रत्येक शरीर के वैक्रय शरीर लोक में जितना है उतना लेश्या का स्थान समझना ।

प्रश्नोत्तर २८८

प्रश्न श्री "उत्तराध्ययन जी" सूत्र के अ० ३४ गाथा ६० में कहा है कि अन्तर मुहूर्त गये और अन्तर मुहूर्त बाकी रहे अब लेश्या प्रणम्या होने पर जीव परलोक में जावें तो अन्तर मुहूर्त बाकी रहे और अन्तर मुहूर्त गये जीव परभव में किस रीति से जावे ?

उत्तर---मनुष्य तिर्यंच के परभव की लेश्या आने के पीछे अंतर मुहूर्त से मरण पावें। इस तरह लेश्या को अन्तर मुहूर्त गये पीछे मरण पावें और देवता तथा नारकी अपनी मूल लेश्या का अन्तर मुहूर्त बाकी रहे तत्पश्चात् मरण पाकर परभव में जावें यहाँ "उपनाय" है वह मूल लेश्या का का अन्तर मुहूर्त भोगवे. उसमें प्राप्ति का अन्तरमुहूर्त छोटा जानना और लेश्या का अन्तरमुहूर्त बड़ा जानना। इसलिये मनुष्य तिर्यंच में आये बाद परभव की लेश्या सम्भव है। यहां अन्तरमुहूर्त का असंख्याता भेद समझना। इस प्रमाण से भावार्थ "लघुसंग्रहणी" ग्रन्थ में कहा है।

प्रश्नोत्तर २८९

प्रश्न - श्री " उत्तराध्ययन जी " सूत्र के अ० ३४ में कहा है कि तेजु लेश्या की उत्कृष्ट स्थिति अथवा पद्म लेश्या की जघन्य स्थिति कही है सो यह पहिले दूसरे देवलोक में एक तेजु लेश्या है और वह देवताओं की उत्कृष्ट स्थिति २ सागर झाझेरी है सो यहां २ सागर झाझेरी पद्म लेश्या की जघन्य स्थिति हुई तो तीसरे देवलोक में एक पद्म लेश्या है और वहां के देवताओं की जघन्य २ सागर की स्थिति है तो वह २ सागर वाले देवता के कौन २ सी] लेश्या कहनी ?

उत्तर - तीसरे देवलोक में जघन्य आयुवाला के तेजु लेश्या पावे सो भी पहिला आश्री अलग गवेषी नहीं है (साक्ष्य श्री " जीवाभिगम जी " सूत्र वृत्ति में तथा संग्रहणी की.)

उत्तर—मध्य भाग में आठ योजन जाडी और फिरती आठ योजन इसमें सारती है और पीछे प्रदेश पतर के मक्खी का पांख जैसी पतली है (साख:—श्री " उत्तराध्ययन जी " सूत्र के अ० ३६)

प्रश्नोत्तर २९४

प्रश्न —श्री " नंदी जी " सूत्र में अवधिज्ञान का बहुत भांगे चले हैं जामें आगे देखे, पीछे न देखे ऐसी ही ऊंचा नीचा इत्यादि बगैरह बहुत भांगे हैं तो यह जीव के सर्व आत्म प्रदेश खुला हुआ समझना कि जिस तरफ देखे उसी तरफ खुला समझना ?

उत्तर—उस जीव के सर्व प्रदेश खुले हुए हैं कारण कि श्री जिनराज देव ने कहा है कि " सव्वेणं सव्वे " इस न्याय से सर्व प्रदेश द्वार से पावे और सर्व प्रदेश से छूटे ।

अत्र शंका—तब क्यों सर्व दिशाओं को नहीं देखते ?

उत्तर—जिस नरक देखे उस नरक का सर्व प्रदेश खुला है कारण कि एक प्रदेश को असंख्य प्रदेश ने स्पर्श किया है और असंख्य को एक ने स्पर्श किया है दृष्टांत:-शरीर के एक भाग में सुई लगने से सर्व प्रदेश पचखपमान हुये विशेष वेदना जो जहाँ लगी वहां होगी इस न्याय से सर्व प्रदेश से सामान्य पणे क्षयोपशम हुआ उस नरक का आत्म प्रदेश खुला हुआ और उस ओर अवधि से देखा। पीछे तत्त्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर २९५

प्रश्न—श्री " नंदी जी " सूत्र में कहा है कि क्षेत्र आश्री मनुष्य को अवधिज्ञान उत्पन्न हुआ है तो उस ठिकाने क्षेत्र बल समझना कि आत्म बल समझना। जो क्षेत्र बल हो तो दूसरा बैठे तो वह भी देखे अथवा आत्म बल हो तो दूसरे ठिकाने देखना चाहिये तो किस न्याय से समझना ?

उत्तर क्षेत्र कोई २ पणो ने बल नहीं करते हैं परन्तु सच्चा आत्म को है कारण कि अवधिज्ञान के ६

भांति है उनवें "आणाणु गामी" अवधि है उसका यह निश्चय भाव है कि जिस ठिकाने उपजे उसी ठिकाने देखे। परन्तु दूसरी जगह साथ न जावें वह प्राणी के "आणाणु गामी" अवधिका क्षयोपशम हुआ है इस लिये वहां ही देखे परन्तु क्षेत्र वह वह पणोको निमित्त कारण रूप है उपादान कारण कि अनुगई पणे आत्मको क्षयोपशम समझना। पीछे तत्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर २९६

प्रश्न—श्री "नंदी जी" सूत्र में २ प्रकार का अवधिज्ञान कहा है वह बाह्य और अभ्यंतर किस रीति से समझना?

उत्तर—अभ्यंतर इसके सारे भव संबन्धी समझना और बाह्य वह नया उत्पन्न हुआ वह देव नारकी के अ-भ्यंतर मनुष्य के २ पावे और तिर्यंच के एक बाह्य पावे इसी तरह तिर्यंच विना दूसरे जीव के परभव के साथ

लाख, क्रोड, क्रोडा क्रोड यह भी बोलना अवश्य उसे " असंलप्पा " कहना इतना जानना विशेष श्री "अनुयोग-द्वार " सूत्र के पाठ में एक बोल सलाका है परन्तु दूसरा तीन बोल नहीं है ऐसे ही तीन बोल की जरूरत नहीं कैसे कि सुत्र पाठ हैं वो यह हैं "एमयां एवइय खेतपल्ले आइठे पढमा सलागा" इससे इतना क्षेत्र पालाको कहिए प्रथम सलागा ऐसा सलागा को " असंलप्पा " कहते हैं वह " असंलप्पा " से लोक भरा तो भी उत्कृष्ट संख्याता न पावे पाठ " एवइयाणं सलागाणं असंलप्पा लोग भरीया तहाविह कोसयं संलेजनपायइ " इससे यह बहुत सलागा लोक में भरा तो उत्कृष्ट संख्याता न पावे यह समझने का कि जंबुद्वीप जितना पाला उसमें सरसव भर द्वीप समुद्र मेलता असंख्याता योजन का विस्तार वाला द्वीप ठेल्लो दानों पहुंचे वहां पाला जंबुद्वीप इतना ही कल्पना परन्तु असंख्याता योजन का पालों कोई ठिकाने कल्पना नहीं कैसे कि असंख्याता योजन का द्वीप में नियमों असंख्याता दाना समाय। इस लिये जंबुद्वीप इतना हो सर्व ठिकाने पाला " असंलप्पा " बहुत करके

प्रश्नोत्तर २९९

प्रश्न—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय इन तीनों का देश, प्रदेश है कि नहीं ?

उत्तर—समाधि रूप में देश प्रदेश नहीं (साक्षः—श्री " अनुयोगद्वार " सूत्र में विशेष अविशेष के अधिकार में)

अपशंका—श्री " पन्नवणा जी " सूत्र में तथा श्री " भगवती जी " सूत्र में देश प्रदेश कहा है सो कैसे ?

समाधान—उस सूत्र में कहा है उस उपचार नय के मत से विजाति से जितनी जगह में परमाणु रहे इतनी जगह को एक प्रदेश कहा है परन्तु समाधि में तो एक स्कंध ही है दृष्टांत कपड़े का टाका में हाथ नहीं है परन्तु हाथ दूसरी वस्तु से कल्पे इस न्याय से समझना ।

प्रश्नोत्तर ३०२

प्रश्न—शब्द का पुद्गल शब्दपणे रहे तो कितने काल रहे ?

उत्तर—जघन्य एक समय रहे और उत्कृष्ट आवलिका के असंख्याता भाग में रहकर पीछे शब्दपणा का पुद्गल पलट जाय (शाखः—श्री " भगवती जी " सूत्र के श० ५ उ० ७ में कहा है ।

अत्र शंका—असंख्याता समय की एक आवलिका होता है तो यहां उत्कृष्ट स्थिति आवलिका के असंख्याता भाग की कही तो जघन्य उत्कृष्ट में कुछ फरक न पड़ा तो यहां विशेष क्या समझना ?

समाधान—श्री ' अनुयोगद्वार " सूत्र में असंख्याता के ९ भेद कहे हैं उस मांहिला चौथा भेद परित जघन्य असंख्याता की आवलिका समझनी उस आश्री विशेष उत्कृष्ट समझना ।

॥२८८॥

... प्रमाण अंगुल से यह उत्सेद अंगुल से हजार गुणा बड़ा जानना। (साक्षी—श्री "अनुयोगद्वार" सूत्र का।

प्रश्नोत्तर ३०७

प्रश्न श्री "जीवाभिगमजी" सूत्र तथा श्री "पन्नवणाजी" सूत्र वगैरह सूत्रमें समूच्छिम मनुष्य सर्व अपर्याप्ता कहे और श्री "अनुयोग द्वार" सूत्र में विशेष का अविशेष का बोल चला वहां विशेष में समूच्छिम मनुष्य को अपर्याप्ता और पर्याप्ता कहा सो कैसे ?

उत्तर:—वैसे समूच्छिम मनुष्य तो अपर्याप्ता हैं परन्तु यहां दो बोल पद पूर्ण समझा जाता है तथा सर्व अपर्याप्ता आठ प्राण पर्याप्ति बांधे बिना मरे नहीं इस अपेक्षा से यहां सर्व पर्याप्ता कहा है।

उत्तर—ग्यारहवें गुण स्थान वाला जीव में पावे।

शंका—ग्यारहवें गुणस्थान से तो मनुष्य गति का उदय है तो इस भांगे में उदय नहीं है तो किस रीति से पावे?

समाधान—ग्यारहवें गुणस्थान से आयु का अबंधक है अर्थात् एक गतिको बन्धन हो इसलिए मनुष्य की गति का उदय नहीं है इसलिए ऊपर का बताया हुआ भांगा पावे तो बाधक नहीं है।

प्रश्नोत्तर ३१०

प्रश्न—क्षेत्र और क्षेत्रकी स्पर्शना इन दोनों में क्या फरक समझना।

उत्तर—जितना क्षेत्र का प्रदेश अवगाह किया हुआ है वह क्षेत्र समझना और स्पर्शना सो एक प्रदेश के जघन्य

अपनी कायाका ३ पर कायका ४ स्वकाय का उत्कृष्ट ६ स्पर्श करें और परकाय का ७ स्पर्श करें यह अपना भीतर के प्रदेश संयुक्त होवे इससे ७ प्रदेश स्पर्शे हैं (प्रमाण—श्री " अनुयोगद्वार " सूत्र की तथा श्री " भगवती जी " सूत्र की) चारों दिशा एक २ ऊपर का एक नीचे इस तरह ६ जानना और ७ वे तो १ संयुक्त का लेना चाहिए।

प्रश्नोत्तर ३११

प्रश्न—अनुपूर्वी द्रव्य के ५ भांगा यह क्षेत्र यकी लोक के असंख्यातवां भाग (२) संख्यातवां भाग (३) बहुत असंख्याता (४) बहुत संख्याता (५) सर्व लोक यह पांच भेद किस अपेक्षा से पावे ?

उत्तर—एक द्रव्य आश्री जघन्य तीन प्रदेशी स्कंध हैं यह तीन आकाश प्रदेश अवगाढ हैं तो यह लोक के असंख्यात वें हैं अनंत प्रदेशिया बादर सूक्ष्म स्कंध है वह लोक के असंख्यातवें भागे आकाश प्रदेश अवगाढ हैं केवली का कपाट आश्री, बहुत संख्याता यह मंथाण आश्री, बहुत असंख्याता यह दण्ड आश्री, सर्व लोक यह

समुद्र पावस। पांचवें समय सर्व लोक पूर्ण आधी समझना। (शास्त्र:—श्री " अनुयोगद्वार " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर ३१२

प्रश्न—मनुष्य कितने मुंह का हो ?

उत्तर—श्री " अनुयोगद्वार " सूत्र में ९ मुंह का कहा है वह अपना मुंह १२ अंगुल का है सो वह अंगुल को ९ गुणा करने से सर्व देहमान उत्तम पुरुष को १०८ अंगुल का होवे उनका ९ भाग रूप ९ मुंह है।

प्रश्नोत्तर ३१३

प्रश्न—दश भवनपति के १० दण्डक अलग २ कहे हैं और वैमानिक तथा वाणव्यंतर का एक २ सामिक

कहा उसका क्या कारण ?

उत्तर—जिसकी जाति अलग २ होवे और स्थिति भी अलग २ हो तो उसका दंडक अलग २ कहा।

अप्रशंका—वैमानिक की स्थिति अलग २ है और वाणव्यंतर की जाति अलग २ हैं तो उसका दंडक कैसे अलग २ न कहा ?

समाधान—उन दोनों में एक २ बोल अलग है इससे कहा नहीं परन्तु दोनों बोल अलग २ होवें तो दण्डक अलग करें।

विशेष शंका—तिर्यंच पचेंद्रि की जाति अलग २ हैं और स्थिति भी अलग २ है तो उसका दण्डक अलग२ कैसे न कहा ?

उत्तर -यहां क्रोधी नहीं समझना । परन्तु कृपण अर्थात् जो पुरुष स्त्री को देख कर वीर्य रख न सके उस पुरुष का दीक्षा न देनी और सर्वज्ञ पुरुष ने इस हेतु से यहां कृपण कहा है ।

प्रश्नोत्तर ३२४

प्रश्न श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १ उ० २ में समदृष्टि नारकी के महावेदना कही और श्री " भगवती जी " सूत्र श० १८ उ० ५ में अल्प वेदना कही वह कैसे ?

उत्तर मानसिक दुःख समदृष्टि नारकी ज्यादा वेदे वह अपना कृत्य का अफसोस ज्यादा करें इससे महावेदना कहा और समदृष्टि समभाव से वेदे हैं इससे अल्प समझना तथा समदृष्टि उत्तर दिशा की नरक में उपजे इससे शारीरिक अल्प वेदना कहीं (साक्षी—श्री " दशाश्रुत स्कंध जी " सूत्र के अ० १०)

प्रश्नोत्तर ३२५

प्रश्नः—साधुजी महाराज किन आदमियों को दीक्षा न देवें ?

... के आठवें स्थान में एकल विहारी मुनि के आठ गुण वर्णन किये गये हैं किन्तु व्यवहार नय के मत से आजकल ये गुण धारण करने असाध्य रतीत होते है इस लिये आज कल एकल विहारी मुनि सूत्रानुसार नहीं सिद्ध होते हैं।

प्रश्नोत्तर ३२७

प्रश्न क्या श्रावक साधु जी महाराज की वैयावच्च कर सक्ता है ?

उत्तर श्रावक लोक साधुजी महाराज की मन और वाणी से सदैव काल वैयावच्च करते हैं किन्तु काय द्वारा बारहवां व्रत के अनुसार चार प्रकार के अन्न पानी द्वारा भी वैयावच्च करते हैं अपितु अन्य प्रकार की जो अंग स्पर्श की वैयावच्च है वे श्रावक लोक मुनियों की नहीं करते हैं। मुनियों का इस प्रकार की वैयावच्च कराने का कल्प है " दश वैकालिक सूत्र के तृतीया ध्याय के पाठ से ऐसे सिद्ध होता है।

उपाध्याय श्री महाराज साहब से विज्ञप्ति की- आप इस ग्रन्थ का संशोधन करें और श्री उपाध्याय जी महाराज साहब ने विज्ञप्ति स्वीकार कर ली किन्तु अवकाश अधिक उपलब्ध न होने के कारण मुनि श्री हेमचन्द्र जी स्व शिष्य को आज्ञा दी थी तुम इसका संशोधन करो अब उन्होंने स्व गुरु की आज्ञा से इसका संशोधन किया यदि कोई अशुद्धि रह गई हो तो मेरे पर अनुग्रह करें।

प्रकाशक—

वाडीलाल एम शाह.

ठे० सेठ का कूचा.

देहली।